₹10
www.kewalsachtimes.com
मार्च 2026

KEWAL SACH TIMES

A National Magazine

नीतीश कुमार के राज्यसभा जाने के मायने

RNI NO.-BIHBIL/2011/49252, DAVPNO.-131729, POSTAL REG. NO.:-PS.-78

जन-जन की आवाज है केवल सच

आत्म-निर्भर बनने वाले युवाओं को सपोर्ट करें

आपका छोटा सहयोग, हमें मजबूती प्रदान करेगा

www.kewalsach.com

www.kewalsachlive.in

-: सम्पर्क करें :-

पूर्वी अशोक नगर, रोड नं.-14, मकान संख्या-28/14,

कंकड़बाग, पटना (बिहार)-800020, मो०:-9431073769, 9308815605

जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ

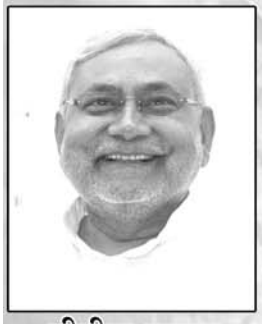

नीतीश कुमार
01 मार्च 1951

मेरी कॉम
01 मार्च 1983

शंकर महादेवन
03 मार्च 1967

शिवराज सिंह चौहान
05 मार्च 1959

अनुपम खेर
07 मार्च 1955

नवीन जिंदल
09 मार्च 1970

उमर अब्दुल्लाह
10 मार्च 1970

श्रेया घोषाल
12 मार्च 1984

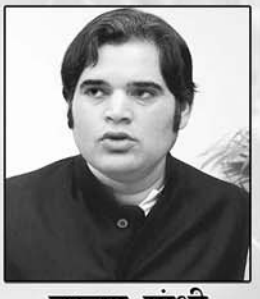

वरूण गांधी
13 मार्च 1980

अमीर खान
14 मार्च 1965

हनी सिंह
15 मार्च 1984

राजपाल यादव
16 मार्च 1971

सानिया नेहवाल
17 मार्च 1990

रानी मुखर्जी
21 मार्च 1978

स्मृति जुबैद ईरानी
23 मार्च 1976

इमरान हाशमी
24 मार्च 1979

मधु
26 मार्च 1972

प्रकाश राज
26 मार्च 1965

शीला दीक्षित
31 मार्च 1938

मीरा कुमार
31 मार्च 1945

KEWAL SACH TIMES

A National Magazine

Regd. Office :-
East Ashok, Nagar, House No.-28/14, Road No.-14, kankarbagh, Patna- 8000 20 (Bihar) Mob.-09431073769,
E-mail :- kewalsach@gmail.com

Corporate Office:-
Vaishnavi Enclave, Second Floor, Flat No. 2B, Near-firing range, Bariatu Road, Ranchi- 834001
E-mail :- editor.kstimes@rediffmail.com

Delhi Office :-
Sanjay Kumar Sinha
A-68, 1st Floor, Nageshwar talla, Shastri Nagar, New Delhi-110052
Mob.- 09868700991, 09955077308
kewalsach_times@rediffmail.com

Kolkata Office :-
Ajeet Kumar Dube, 131 Chitranjan Avenue, Near- md. Ali Park, Kolkata- 700073 (West Bengal)
Mob.- 09433567880, 09339740757

ADVERTISEMENT RATES PER ISSUE

	AREA	FULL PAGE	HALF PAGE
COLOUR	Cover Page	3,00,000/-	N/A
	Back Page	1,00,000/-	65,000/-
	Back Inside	90,000/-	50,000/-
	Back Inner	80,000/-	50,000/-
	Middle	1,40,000/-	N/A
	Front Inside	90,000/-	50,000/-
	Front Inner	80,000/-	50,000/-

	AREA	FULL PAGE	HALF PAGE
B & W	Inner Page	60,000/-	40,000/-

1. एक साल के नियमित विज्ञापन पर पत्रिका के वेवसाइट **www.kewalsachtimes.com** के फ्रंट पर भी विज्ञापन निःशुल्क तथा आपका वेवसाइट से सीधा लिंक हो सकता है।
2. एक साल के नियमित विज्ञापन पर 10 प्रतिशत की रियायत।
3. आपके प्रोडक्ट या संगठन के प्रचार-प्रसार हेतु आलेख को उचित स्थान।
4. पत्रिका द्वारा सामाजिक कार्य में आपके संगठन/प्रोडक्ट का बैनर/फ्लैक्स को उचित स्थान देकर आपके संगठन का व्यापक प्रचार-प्रसार।
5. विज्ञापन का भुगतान चेक या आर.टी.जी.एस. से ही मान्य होगा।

महाप्रबंधक (विज्ञापन)

सबको नाथेंगे एक साथ

आदित्यनाथ

अपनी प्रतिक्रिया हमारे ई-मेल पर दें:- editor.kstimes@rediffmail.com

2027 में उत्तरप्रदेश में योगी की अग्नि परीक्षा है (हैट्रिक पारी) और इसमें CM येगी को सिर्फ विपक्ष के साथ ही जंग नहीं है बल्कि पर्दा के पीछे भाजपा एवं मोदी-शाह के साथ भी संघर्ष तय है। कट्टर हिन्दू सम्राट के रूप में सम्पूर्ण भारत में अपनी दमदार पहचान रखने वाले बाबा योगी का बुलडोजर वाला जलवा इस कदर कायम है कि बिहार हो या दिल्ली, गुजरात हो या मध्यप्रदेश बुलडोजर का पावर दिख रहा है। पाकिस्तान हो या देश का गद्दार CM योगी से थर-थर कांपता है क्योंकि सभी को इस बात का पूरा ज्ञान है कि बाबा का माथा ठनका तो फैसला ऑन द स्पॉट कर देंगे। 2024 के लोकसभा चुनाव में योगी को राजनीतिक दृष्टिकोण से कमजोर बनाने के लिए उनके द्वारा दिये गये MP के उम्मीदवारों को टिकट से वंचित किया गया जिसका नतीजा चुनाव परिणाम से समझा जा सकता है कि मोदी एवं शाह की जिद्द की वजह से प्रभु श्रीराम की नगरी अयोध्या से भी BJP को मुंह की खानी। किसी भी State के Election में योगी को BJP ब्रांड के रूप में उतारती है। BJP यह जानती है की PM मोदी के बाद CM योगी ही भाजपा के खेवनहार हैं। मोदी के खास अमित शाह की नजर भी PM की कुर्सी पर है और योगी का बढ़ता कद देखकर वह धर्मसंकट में हैं इसलिए आये दिन योगी को कमजोर करने के लिए कभी प्रदेश अध्यक्ष बिना योगी की जानकारी में नियुक्त कर दिया जाता है। 2027 के चुनाव में योगी का मुकाबला समाजवादी पार्टी के साथ-साथ खुद की पार्टी के साथ होना संभव माना जा रहा है, ऐसे में बाबा का बुलडोजर कहीं पार्टी पर न चल जाये।

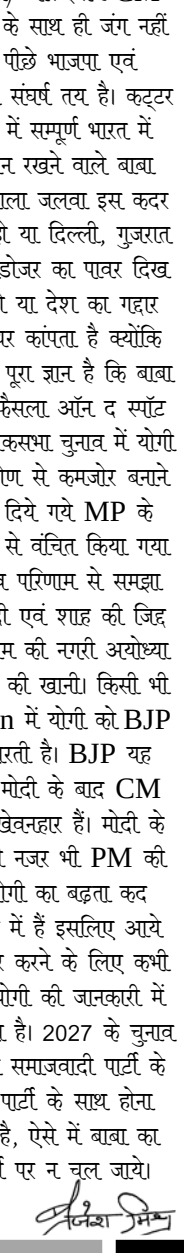

20 27 में उत्तरप्रदेश का विधानसभा चुनाव में बुलडोजर बाबा हैट्रिक लगा पायेंगे या फिर 2024 के लोकसभा चुनाव की तरह उनके खास उम्मीदवारों का टिकट पार्टी के आलाकमान काट देंगे उसकी चर्चा पूरे प्रदेश में कोरोना की तरह वायरल है। लगातार यूपी में ब्रहम्णों के अस्तित्व को मिटाने का राजनीतिक षडयंत्र चल रहा है और विभिन्न पार्टियां उनको पक्ष में गोलबंद करने की कोशिश में जुटी हुई है। 403 सीट पर भाजपा अपने सहयोगी दलों के साथ एकबार फिर सपा और बसपा को चारों खाने चित करना चाहती है लेकिन यूजीसी 2026 कानून को लेकर चल रहे सवर्णों के आन्दोलन ने मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ (बुलडोजर बाबा) को मुश्किल में डाल रखा है कि कहीं ब्राह्म्णों की नाराजगी चुनाव के वक्त भी कायम रही तो उत्तरप्रदेश का विधानसभा चुनाव जीतना आसान नहीं होगा। रामदास अठावले की पार्टी रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया भी 25 सीट पर दावा कर रहे हैं और नहीं तो 403 सीटों पर अकेले चुनाव लड़ने की बात करके प्रेसर बना रहे हैं। PM मोदी और CM योगी के बीच राजनीतिक मनमुटाव को लेकर विपक्ष अंग्रेजों वाली नीति अपनाने की कोशिश कर रहे हैं लेकिन PM मोदी ने उत्तरप्रदेश के योगी बाबा के पक्ष में ऐसे -ऐसे शब्दों का प्रयोग करते हैं जिससे साफ हो जाता है कि PM एवं CM के बीच का मनमुटाव कोई मुद्दा ही नहीं है। 2027 में UP के CM का चेहरा बुलडोजर बाबा ही होंगे इसकी घोषणा पार्टी ने कर चुकी है। एससी/एसटी एक्ट एवं UGC 2026 गंभीर चुनौती बनकर यूपी में योगी को मुश्किल में डाल सकता है क्योंकि राजपूत, ब्राह्म्ण और यादव के बाद दलित भी खुद को प्रदेश में असुरक्षित महसूस कर रहे हैं जबकि इस राजनीतिक चाल में योगी की कोई भूमिका नहीं है लेकिन योगी की बढ़ती लोकप्रियता की वजह से अमित शाह को खुद के लिए खतरा महसूस होता है। 2024 के लोकसभा चुनाव में उत्तरप्रदेश से काफी नुकसान हुआ और नतीजा यह हुआ कि खुद के दम पर भाजपा 272 का आंकड़ा पार नहीं कर सकी। पूरे देश में इस बात की चर्चा है कि योगी के बढ़ते कद को छोटा करने के लिए उनके द्वारा दिये गये लोकसभा के उम्मीदवारों को जान-बूझकर टिकट से वंचित रखा गया लेकिन इसका खामियाजा भी पार्टी को उठाना पड़ा। भले ही नरेन्द्र मोदी के काफी करीबी माने जाने वाले अमित शाह पार्टी को अपने अनुसार चलाते हैं लेकिन हिन्दुत्व के चेहरे के रूप में बाबा योगी ने मोदी एवं शाह दोनों को पीछे छोड़ दिया है तथा प्रदेश में कुशल शासन-व्यवस्था की मिसाल पेश की है। देश के किसी भी राज्य में चुनाव हो भाजपा के लिए हिन्दूत्व कार्ड को अपने पक्ष में करने के लिए बाबा को ही आगे रखा जाता है। आरक्षण और sc/st के बाद UGC के राजनीतिक दवाब को झेलना किसी भी राज्य के मुख्यमंत्री के लिए आसान नहीं है और जब केन्द्र में बैठे अपने ही दल के सुप्रीम भी समय-समय पर उंगली करते रहेंगे तो नुकसान का सामना करना आसान नहीं होगा। जिस प्रकार MP में CM मोहन यादव ने संतोष वर्मा के बयान पर कार्रवाई करने के बजाय 100 प्रतिशत आरक्षण की वकालत कर यह साबित कर दिया है की मोहन यादव सत्ता की बांसुरी भाजपा एवं संघ के ईशारे पर बजा रहे हैं। अखिलेश यादव की कूटनीति और मायावती का दलित-ब्राह्म्ण कार्ड के साथ-साथ कांग्रेस का मुस्लिम प्रेम से दो-दो हांथ करने में सफल होने वाले योगी के इसी लोकप्रियता से मोदी-शाह असहज रहते हैं लेकिन योगी को हटाकर UP में विधानसभा का चुनाव अकेले दम पर जितना कठिन होगा यह भी एहसास करते हैं। मोदी के बाद PM कौन होगा इसको लेकर पार्टी के भीतर भी चर्चा है तो देश के विपक्ष एवं जनता के बीच भी, ऐसे में मोदी के हनुमान अमित शाह ने बड़ी चतुराई से राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नविन को बनाकर संघ एवं पार्टी दोनों को जोर का झटका जोर से दिया है लेकिन हिन्दू ब्रांड योगी को हिन्दू जनता PM देखना चाहती है। बाबा ने जिस प्रकार शंकराचार्य को मेला में अपनी शक्ति का एहसास कराया है जबकि चर्चा है कि इसके पीछे भी शाह का चाल था। 2022 में प्रचंड जीती योगी के नेतृत्व में हुई और 403 में से 255 सीटे जीतकर अपने 05 साल के कुशल नेतृत्व का परिचय देते हुए एक साथ सबको नाथने में कामयाब बाबा का बुलडोजर कई राज्यों में राजनीति का हिस्सा बन गया बल्कि अमेरिका के चुनाव में भी बुलडोजर की चर्चा जमकर हुई। भारत के विभिन्न राज्यों के चुनाव और यूपी के चुनाव में भगवान श्री राम (अयोध्या), भगवान श्री कृष्ण (मथुरा), भगवान श्री शिव (काशी) को अपने अस्तित्व में लौटाने वाले बाबा योगी को भाजपा के द्वारा अगर साजिश नहीं हो तो आदित्यनाथ एक साथ विपक्ष के साथ पार्टी के जयचंदों को भी नाथने में कामयाब हो सकते हैं। 2027 के लिए बाबा ने महिला आरक्षण और सुरक्षा, दलित और सामाजिक समीकरण, सख्त कानून-व्यवस्था, फर्मा सेक्टर में निवेश और औद्योगिक विकास का प्राथमिकता के साथ आगे बढ़ाकर सत्ता के सिंहासन पर काबिज हो जायेंगे। बाबा को लगता है UGC का मुद्दा भी शांत हो जायेगा और देवताओं की भूमि पर तिसरी बार लगातार सेवा का अवसर मिलेगा और विरोधी घर के हों या बाहर के सब एक साथ नाथे जायेंगे का संकल्प लेकर कार्य का गति देने में लगे हुए हैं। मोदी एवं शाह भी कोई ऐसी चाल नहीं खेलेंगे जो उनके राजनीतिक कैरियर को तबाह कर दे क्योंकि गत वर्ष में लोकप्रियता में कमी आई है।

KEWAL SACH TIMES

A National Magazine

वर्षः- 15, अंकः- 177 माहः- मार्च 2026 रू. 10/-

Editor

Brajesh Mishra 9431073769
6206889040
8340360961

editor.kstimes@rediffmail.com
kewalsach@gmail.com
kewalsach_times@rediffmail.com

Principal Editor

Arun Kumar Banka 7782053204
Nilendu Kumar Jha 9431810505

General Manager (H.R)

Triloki Nath Prasad 9308815605

General Manager (Advertisement)

Manish Kamaliya 6202340243
Poonam Jaiswal 9430000482

Joint Editor/Lay-out Editor

Amit Kumar 9905244479
amit.kewalsach@gmail.com

Legal Editor

Amitabh Ranjan Mishra 8873004350
S. N. Giri 9308454485

Asst. Editor

Mithilesh Kumar 9934021022
Sashi Ranjan Singh 9431253179
Rajeev Kumar Shukla 7488290565

Sub. Editor

Arbind Mishra 6204617413
Prasun Pusakar 9430826922

Bureau Chief

Sanket kumar Jha 7762089203

Bureau

Sridhar Pandey 9852168763
Sonu Kumar 8002647553

Photographer

Mukesh Kumar 9304377779

प्रदेश प्रभारी

दिल्ली हेड

संजय कुमार सिन्हा 9868700991

झारखण्ड हेड

ब्रजेश मिश्र (2) 7979769647
7654122344

पश्चिम बंगाल हेड

अजीत दुबे 9433567880
9339740757

मध्यप्रदेश हेड

अभिषेक पाठक 8109932505
8269322711

छत्तीसगढ़ हेड

आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश हेड

निर्भय कुमार मिश्रा 9452127278

उत्तराखण्ड हेड

आवश्यकता है

महाराष्ट्र हेड

आवश्यकता है

गुजरात हेड

आवश्यकता है

आंध्र प्रदेश हेड

आवश्यकता है

राजस्थान हेड

आवश्यकता है

पंजाब हेड

आवश्यकता है

हरियाणा हेड

आवश्यकता है

राजस्थान हेड

आवश्यकता है

उड़ीसा हेड

आवश्यकता है

आसाम हेड

आवश्यकता है

हिमाचल हेड

आवश्यकता है

दिल्ली कार्यालय

केवल सच टाइम्स,
द्विभाषीय मासिक पत्रिका,
द्वारा- संजय कुमार सिन्हा
A-68, 1st Floor,
नागेश्वर तल्ला, शास्त्रीनगर, न्यू
दिल्ली-110052
मो०- 9868700991, 9431073769

पश्चिम बंगाल कार्यालय

केवल सच टाइम्स,
द्विभाषीय मासिक पत्रिका,
द्वारा- अजीत कुमार दुबे
131 चितरंजन एवेन्यू,
कोलकात्ता, पश्चिम बंगाल- 700073
मो०- 9433567880, 9339740757

झारखण्ड कार्यालय

केवल सच टाइम्स,
द्विभाषीय मासिक पत्रिका,
वैष्णवी इंक्लेव, द्वितीय त्तल,
फ्लैट नं- 2बी
नियर- फायरिंग रेंज
बरियातु रोड, राँची- 834001
मो०- 9308815605

मध्यप्रदेश कार्यालय

केवल सच टाइम्स,
द्विभाषीय मासिक पत्रिका,
द्वारा- अभिषेक कुमार पाठक
हाउस नं.-28, हरसिद्धि कैम्पस
खुशीपुर, चांबड़
भोपाल, मध्य प्रदेश- 462010
मो०- 8109932505,

विशेष प्रतिनिधी

भारती मिश्र 8521308428
बेंकटेश कुमार 8210023343

प्रकाशित आलेख पर आप अपना सुझाव एवं प्रतिक्रिया अवश्य दें।

केवल सच टाइम्स

द्विभाषीय मासिक पत्रिका

हमारा पता है

पूर्वी अशोक नगर, रोड नं.-14,
मकान संख्या:- 14/28, कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार)
सम्पर्क करें:- 9431073769, 8340360961

हमारा ई-मेल

editor.kstimes@rediffmail.com
kewalsach_times@rediffmail.com

फरवरी 2026

भेदभाव

मिश्रा जी,

सोची-समझी राजनीति के तहत 2026 में UGC कानून को शिक्षामंत्री धर्मेन्द्र प्रधान ने सवर्णों के विरोध में बनाकर अंग्रेज की सोच को भी मात दे दिया है। जिन सवर्ण समाज के लोगों ने मोदी एवं शाह के हर बात को दिल पर लेकर देश के भीतर एकतरफा माहौल बनाया वहीं अब देश के भीतर मोदी एवं शाह की प्रतिष्ठा को धूमिल करने में सोसल मीडिया पर सक्रिय हो चुके हैं। सभी प्रकार की असुविधा के बाद भी सवर्ण मोदी को भगवान मानता था लेकिन अपने बच्चों के उपर होने वाले जुल्म पर मौन नहीं बैठने वाला है। खबर लम्बी होने के बाद भी पठनीय एवं संग्रहणीय है।

● **रौशन सिंह, बड़ा बाजार, कोलकात्ता, पं बं**

शंकराचार्य

संपादक महोदय,

फरवरी 2026 **केवल सच टाइम्स**, पत्रिका ज्वलंत विषयों पर सटीक समीक्षात्मक खबरों का प्राथमिकता से लिखा गया है। ''**यौन शोषण के मामले में बुरे फंसे शंकराचार्य अतिमुकेक्तेश्वरानंद**'' खबर में 2025 प्रयागराज महाकुंभ में हुए राजनीतिक बवाल के बाद विवाद सरकार बनाम शंकराचार्य में बढ़ता चला गया और आज स्थिति ऐसी हो गयी है कि मामला शैन शोषण पर आ पहुंचा है। 20 से अधिक बच्चों के साथ कुकर्म के विषय में विडिओ बनाकर जारी किया गया है जिसपर विवाद छिड़ा हुआ है। आपकी पत्रिका किसी भी मामले की पूरी गंभीरता को समझकर खबरों को पाठकों के बीच रखता है।

● **मनोहर सिन्हा, अस्सी घाट, बनारस, यूपी**

अन्दर के पन्नों में

10

15

23

36

घमासान

संपादक महोदय,

केवल सच टाइम्स पत्रिका सभी प्रकार की खबरों को प्राथमिकता के साथ लिखता है। नरवणे की किताब पर छिड़ी जंग पर अमित कुमार की खबर ''**संसद से सोशल मीडिया तक घमासान**'' में संसद भवन में चीन एवं सीमा विवाद को लेकर छिड़ा बहस में जेनरल मनोज मुकुदक नरवणे ने अपनी किताब Four Stars of destiny में खुलकर लिखा है की वर्त्तमान समय में देश की सीमा की क्या हालत है। सत्ता हो या विपक्ष दोनों का देश की मूलभूत समस्याओं से कोई सारोकार नहीं है बल्कि सत्ता में बने रहना भले ही देश में घुसपैठ, आतंकवाद की समस्या बढ़ती रहे। सटीक खबर है और ऐसी खबरों से जानकारी मिलती है।

● **महेन्द्र पाल सिंह, करोल बाग, नई दिल्ली**

हुंकार

संपादक महोदय,

केवल सच टाइम्स पत्रिका के फरवरी 2026 अंक में पत्रकार अमित कुमार की खबर ''**सवर्णों की हुंकार से कांप उठी मोदी सरकार**'' में UGC 2026 के मामले को लेकर देश की राजधानी दिल्ली में सवर्णों की विशाल टोली ने सरकार एवं पुलिस-प्रशासन को अपनी चट्टानी एकता का परिचय दिया है। सबका साथ-सबका विकास का नारा देकर सवर्ण का विनाश की पटकथा लिखकर भारत को विश्वगुरू बनाने का सपना देख रहे हैं। MP के CM मोहन यादव ने IAS संतोष वर्मा के बयान को सही साबित करते हुए 100 प्रतिशत आरक्षण को पेश कर दिया है। इस आलेख में सवर्णों के आक्रोश को प्राथमिकता के साथ लिखा गया है जो बधाई योग्य है।

● **नारायण मिश्र, सेक्टर- 12, द्वारका, नई दिल्ली**

अंधभक्त

मिश्रा जी,

मैं केवल सच टाइम्स पत्रिका का नियमित पाठक हूं और फरवरी 2026 अंक का संपादकीय ''**कुंभकर्णी नींद से जागे अंधभक्त**'' में आपने केन्द्र सरकार के द्वारा UGC कानून 2026 पर सटीक विश्लेषण करके सवर्णों की समस्या को पाठक के समक्ष रखा है। 2014 से 2026 के बीच में PM मोदी ने किस प्रकार वोट के लिए SC/ST जैसा कानून को सख्त बनाया तथा UGC के राजनीतिक षड्यंत्र को लोग समझकर राष्ट्रीय स्तर पर विरोध कर रहे हैं। सच में जो अंधभक्त थे उनको जोर का झटका जोर से दिया है और आरक्षण के मुद्दे को भी ताल ठोकर 100 प्रतिशत किया जा रहा है की साजिश को भी आपने बखूबी लिखा है।

● **खुशी भारद्वाज, स्टेशन रोड, गया, बिहार**

स्तंभ

ब्रजेश जी,

आपकी पत्रिका केवल सच टाइम्स में एक नियमित रूप से कानूनी सलाह का स्तंभ आता है। काफी सटीक सलाह प्रतिमाह मिलता है ठीक इसी तर्ज पर चिकित्सीय सलाह, प्रतियोगी छात्रों के लिए प्रश्न-उत्तर के साथ व्यापार की स्थिति सहित फिल्म और खेल को स्थान मिले तो इसकी पकड़ पाठकों की बीच काफी प्रभावशाली बन जायेगी। देश के भीतर आदिवासी बहुल क्षेत्र की समस्या एवं समाधान को भी प्राथमिकता मिले और सरकार द्वारा उनको कौन-कौन से सुविधा मुहैय्या करायी जा रही है की जानकारी को भी स्तंभ के रूप में प्रकाशित हो तो पाठकों को एक ही जगह पर पढ़ने को मिलने लगे तो बुहत उपयोगी साबित होगा।

● **सुनील यादव, करमटोली चौक, राँची, झा०**

श्री चन्द्र प्रकाश सिंह

प्रधान संरक्षक सह प्रबंध संपादक

'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**

राष्ट्रीय संगठन मंत्री, राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस (इंटक)

पूर्व निदेशक सदस्य, ओरियेंटल बैंक ऑफ कॉमर्स

09431016951, 09334110654

डॉ. सुनील कुमार

शिशु रोग विशेषज्ञ सह मुख्य संरक्षक

'केवल सच' पत्रिका

एवं 'केवल सच टाइम्स'

एन.सी.- 115, एसबीआई ऑफिसर्स कॉलोनी,

लोहिया नगर, कंकड़बाग, पटना- 800020

फोन- 0612/3504251

सुधीर कुमार

मुख्य संरक्षक सह निदेशक ''**मगध इंटरनेशनल स्कूल**'' टेकारी

'' **केवल सच** '' पत्रिका **एवं** '' **केवल सच टाइम्स** ''

9060148110

sudhir4s14@gmail.com

कैलाश कुमार मौर्य

मुख्य संरक्षक

'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**

व्यवसायी

पटना, बिहार

7360955555

एक नजर

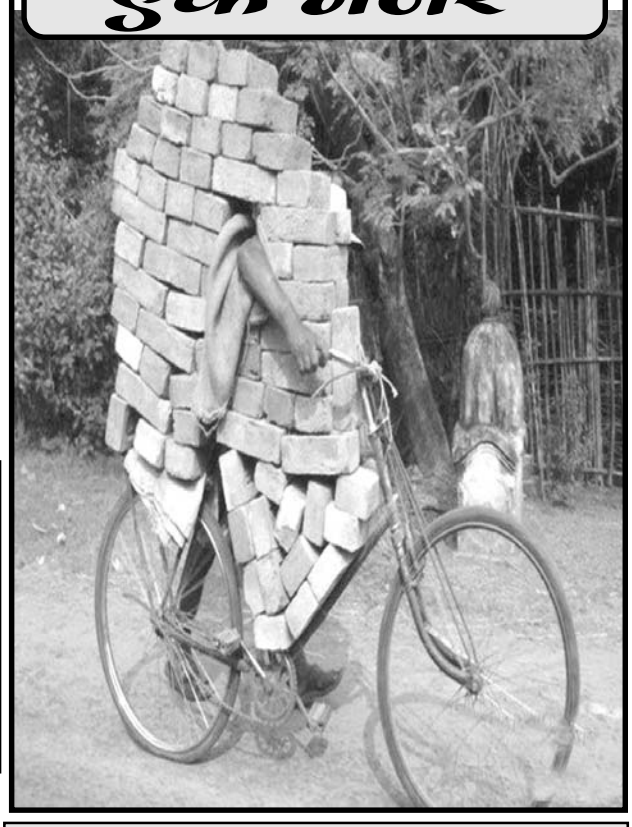

संपादकीय व प्रधान कार्यालय:-

- पूर्वी अशोक नगर, रोड नं:-14, मकान संख्या:- 28/14, कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार)
  e-mail:- kewalsach@gmail.com,
  editor.kstimes@rediffmail.com
  kewalsach_times@rediffmail.com
- स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक ब्रजेश मिश्र द्वारा जय हिन्द प्रेस कंकड़बाग पटना-800020 से मुद्रित एवं पूर्वी अशोक नगर, रोड नं. 14, कंकड़बाग पटना-800020 से प्रकाशित, संपादक- ब्रजेश मिश्र। **RNI NO.- BIHBIL/2011/49252**
- पत्रिका में प्रकाशित समाचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।
- सभी प्रकार के वाद - विवादों का निपटारा पटना न्यायालय के अधीन होगा।
- आलेख पर किसी को कोई आपत्ति हो तो एक महीने के भीतर खंडन करें।
- किसी भी लेख के लिए रचनाकार/लेखक स्वयं जिम्मेवार होंगे।
- सभी पद अवैतनिक हैं।
- विज्ञापन की सत्यता की जाँच आप अपने स्तर पर कर लें।
- फोटो-समाचार साभार भी (माध्यम- इंटरनेट एवं अन्य स्त्रोत)
- कोई भी शिकायत हमारे पते पर लिखकर भेजें।
- **विज्ञापन का भुगतान चेक या ड्राफ्ट एवं RTGS से ही मान्य होगा।**
- भुगतान BRAJESH MISHRA को ही करें। किसी प्रतिनिधि को नगद न दें।

A/C No.	:-	20001817444
BANK	:-	State Bank Of India
IFSC Code	:-	SBIN0003564
PAN No.	:-	AKKPM4905A

Contributions/Donations are Invited for the Welfare of Elders/Sr. Citizens for the establishment of "APNA GHAR" A home for Sr. Citizens of Bihar & Jharkhand Proposed to be Constructed Under the ageas of " KEWAL SACH SAMAJIK SANSTHAN".

KEWAL SACH SAMAJIK SANSTHAN

Registered Under the Indian Society Act 21, 1880

East Ashok Nagar, Road No.-14,
Kankarbagh, Patna - 800020

Contact No. :- 09431073769, 9955077308, 9308727077

E-mail :- kewalsachsamajiksansthan33@gmail.com

Reg. No. : 1141 (2009-10), Income Tax No. :12AA/2505-8 | 80 जी (5)/तक०/2013-14/1060-63

APNA GHAR

Now in the State of Bihar & Jharkhand

Help the helpless Elders/Sr. Citizen. For which your Contribution and Donation are essential.
Your Coopertation in this direction can make a diffrence in the lives of many Sr. Citizens.

KEWAL SACH SAMAJIK SANSTHAN

A/C No.	-	**0600010202404**
Bank Name	-	**United Bank of India**
IFSC Code	-	**UTBIOKKB463**
Pan No.	-	**AAAAK9339D**

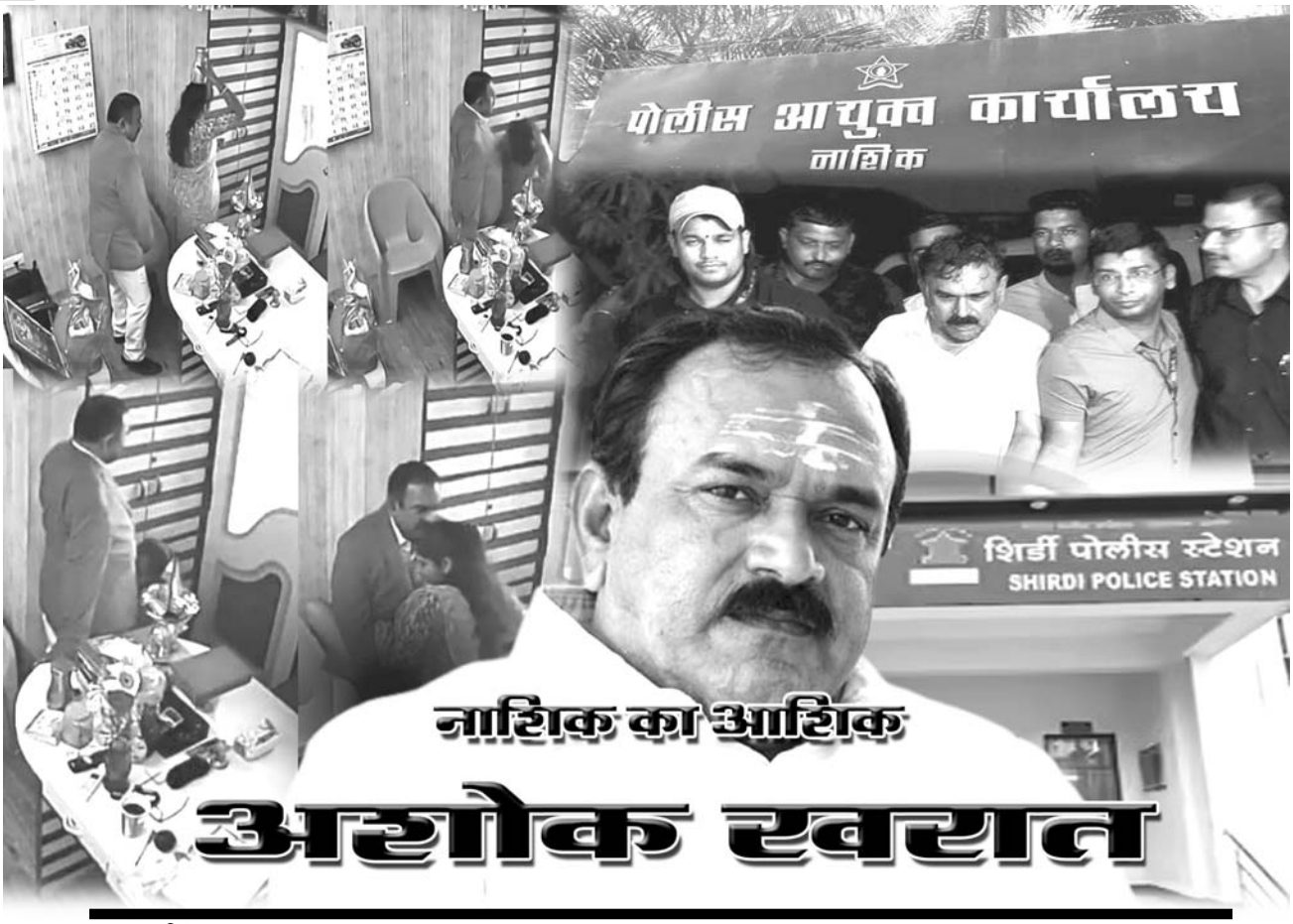

नाशिक का आशिक
अशोक खरात

● गुड्डू कुमार सिंह

पूजा-पाठ, तंत्र-मंत्र और ग्रह दोष दूर करने का झांसा देकर महिलाओं को अपने जाल में फंसाकर यौन शोषण के आरोप, करोड़ों की संपत्ति और बड़े नेताओं-कारोबारियों से संबंध। महाराष्ट्र के नासिक से सामने आया ज्योतिषी का यह मामला किसी फिल्मी कहानी से कम नहीं है। 100 अश्लील वीडियो, 5 मासूमों की नरबलि और महज 10 साल के भीतर 1500 करोड़ का साम्राज्य। यह कोई फिल्मी विलेन की कहानी नहीं, बल्कि अशोक खरात के काले कारनामों का वो कच्चा चिट्ठा है जिसने इंसानियत को शर्मसार कर दिया है। आखिर कैसे एक शख्स ने कानून की नाक के नीचे इतना बड़ा और खौफनाक नेटवर्क खड़ा कर लिया? खुद को आध्यात्मिक गुरु बताने वाला 67 साल का ज्योतिषी अशोक खरात अब सलाखों के पीछे है। पुलिस की जांच में उसके ऑफिस से दर्जनों अश्लील वीडियो मिलने के बाद मामला संवेदनशील हो गया है। उसकी करोड़ों की संपत्ति ने इस केस को और रहस्यमय बना दिया है। अब एसआईटी इस पूरे नेटवर्क की परत-दर-परत जांच कर रही है और आशंका है कि आने वाले दिनों में कई बड़े खुलासे हो सकते हैं। महाराष्ट्र का ज्योतिषि अशोक खरात यौन शोषण, ब्लैकमेलिंग और ठगी के आरोपों में जांच के दायरे में है। एसआईटी की छापेमारी में 100 से ज्यादा संदिग्ध वीडियो, 8 लाख रुपए नकद, एक पिस्टल और बड़ी मात्रा में संपत्ति से जुड़े दस्तावेज बरामद हुए हैं। पिस्तौल की 5 गोलियां गायब हैं, जिससे नरबलि की आशंका और गहरी हुई है। अब तक उसके खिलाफ दुष्कर्म, ब्लैकमेलिंग और अंधश्रद्धा विरोधी कानून के तहत 8 केस दर्ज हो चुके हैं। दरअसल, पुलिस ने 67 साल के अशोक खरात को 35 साल की महिला से बार-बार रेप करने और ब्लैकमेल करने के आरोप में 18 मार्च को गिरफ्तार किया था। कोर्ट ने उसे 24 मार्च तक की पुलिस रिमांड पर

भेज दिया। सरकार ने मामले की जांच के लिए आईपीएस अधिकारी तेजस्विनी सातपुते के नेतृत्व में एक एसआईटी का गठन किया है। अशोक खरात को आध्यात्म और पूजा-पाठ की आड़ में एक महिला के साथ बार-बार रेप करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। पुलिस एफआईआर के अनुसार, खरात महिलाओं को उनकी निजी समस्याओं को सुलझाने का झांसा देकर अपने ऑफिस बुलाता था।

पूजा-पाठ के नाम पर वह महिलाओं को नशीला पदार्थ देकर हिप्नोटाइज कर लेता था। आरोपी तंत्र-मंत्र का खौफ दिखाकर या उनके पतियों की जान को खतरा बताकर उनके साथ शारीरिक शोषण करता था। खरात ने अपने ऑफिस में खुफिया सीसीटीवी कैमरे लगा रखे थे। नासिक क्राइम ब्रांच ने अब तक 100 अश्लील वीडियो बरामद किए हैं, इससे पता चलता है कि उसने एक नहीं, बल्कि कई महिलाओं को अपना शिकार बनाया है। ज्योतिष के कई दिग्गज राजनेताओं से संबंध थे। इसका फायदा उठाते हुए उसने अपना रसूख बढ़ाया।

अशोक खरात मामले में रूपाली चाकणकर का इस्तीफा

नासिक के ढोंगी ज्योतिष अशोक खरात के खुलासे के बाद महाराष्ट्र की राजनीति में हलचल मच गई है। इस मामले में नाम जुड़ने पर राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष रूपाली चाकणकर ने इस्तीफा दे दिया। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने भी सख्त रुख अपनाया है। बताया जा रहा है कि चाकणकर ने स्पष्टीकरण देने के लिए मुख्यमंत्री से मुलाकात की, लेकिन मुख्यमंत्री ने उनकी बात सुनने से इनकार कर दिया। मुख्यमंत्री पहले ही एनसीपी नेताओं को स्पष्ट कर चुके हैं कि इस पूरे प्रकरण से सरकार की छवि को जो नुकसान हुआ है, उसे बर्दाश्त नहीं किया जाएगा जब चाकणकर मिलने पहुंचीं, तब मुख्यमंत्री ने उनकी सफाई में खास रुचि नहीं दिखाई। अपनी सफाई में रूपाली चाकणकर ने कहा कि एक महिला होने के कारण उन्हें आसानी से निशाना बनाया जा रहा है। उन्होंने बताया कि 12 सितंबर की एक फोटो को 2 सितंबर की बताकर पेश किया गया और उस पर मौजूद नंबर को भी मिटा दिया गया। उन्होंने कहा कि 2 सितंबर को मैं अजित दादा के साथ दौरे पर थी। फोटो में मेरे हाथ पर कोई चोट नहीं दिख रही है। जो लोग मेरी बदनामी कर रहे हैं, उन्हें मैं कानूनी नोटिस भेजूंगी। जिन्होंने यह झूठी कहानी गढ़ी है, उनके खिलाफ मैं कानूनी कार्रवाई करूंगी। वही रूपाली चाकणकर ने अपना इस्तीफा राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष और उपमुख्यमंत्री सुनेत्रा पवार को सौंपा। उन्होंने देवगिरी स्थित सरकारी आवास पर जाकर उनसे मुलाकात की और अपना इस्तीफा दिया। इस्तीफे के बाद मीडिया से बात करते हुए रूपाली चाकणकर ने कहा कि मैं पहले से ही महादेव मंदिर ट्रस्ट से जुड़ी थी और मेरा कार्यकाल 2025 में समाप्त हो गया। मैं खरात दंपति को अपना गुरु मानती थी। मैं महाशिवरात्रि जैसे कार्यक्रमों में शामिल होती थी और पूरा परिवार साथ जाता था, क्योंकि हम उन्हें अपना गुरु मानते थे। उन्होंने आगे कहा कि ये वीडियो कई साल पुराने हैं। वे अपने निजी जीवन में क्या कर रहे थे, इसकी मुझे कोई जानकारी नहीं थी। जब मुझे इस घटना के बारे में पता चला, तो मैं हैरान रह गई। मैंने पहले भी कहा है कि पुलिस को इस मामले की गहन और निष्पक्ष जांच करनी चाहिए। जो हुआ वह बेहद घिनौना कृत्य है। हमारी मांग है कि इस मामले की जांच बिना किसी भेदभाव के की जाए।

राजनेताओं के साथ फोटो दिखाकर वह पीड़ितों के सामने दिखाता था कि वह कानून से ऊपर है। पुलिस ने अब मिले सबूतों के आधार पर खरात के खिलाफ तीन एफआईआर दर्ज की हैं। सरकारवाड़ा पुलिस स्टेशन में खरात के खिलाफ 35 साल की महिला के साथ यौन शोषण, वावी पुलिस स्टेशन (नासिक ग्रामीण) में अश्लील वीडियो वायरल करने की धमकी और 5 करोड़ रुपए की फिरौती मांगने और शिरडी पुलिस स्टेशन (अहिल्यानगर) में अश्लील फोटो वायरल करने का केस दर्ज हुआ है। मीडिया अशोक खरात उर्फ कैप्टन उर्फ भोंदू बाबा

के काले कारनामों को खुलासा होने के बाद अब तक राज्य में तीन एफआईआर दर्ज की गई हैं।

गौरतलब है कि इस पूरे मामले का खुलासा तब हुआ जब 27 साल की एक महिला ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई और आरोप लगाया कि उसे कई बार पूजा के बहाने बुलाकर उसके साथ दुष्कर्म किया गया। शिकायत के बाद पुलिस ने मामला दर्ज किया और अब स्पेशल इन्वेस्टिगेशन टीम इस पूरे नेटवर्क की जांच कर रही है। जांच में सामने आया कि आरोपी महिलाओं की निजी परेशानियों का फायदा उठाता था। वह खुद को ज्योतिष, न्यूमरोलॉजी और धार्मिक अनुष्ठानों का बड़ा जानकार बताकर लोगों को भरोसे में लेता था। जिन महिलाओं को पारिवारिक, वैवाहिक या स्वास्थ्य से जुड़ी समस्या होती, उन्हें वह अपने ऑफिस बुलाता और पूजा-पाठ के नाम पर नशीला पदार्थ देकर शोषण करने का आरोप है। पुलिस के मुताबिक वह कई बार महिलाओं को यह कहकर डराता था कि उनके पति की जान को खतरा है या ग्रह दोष के कारण बड़ा अनर्थ हो सकता है और इसी डर का फायदा उठाकर उनके साथ शारीरिक संबंध बनाता था। इस पूरे मामले का खुलासा तब हुआ जब 27 साल की एक महिला ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई और आरोप लगाया कि उसे कई बार पूजा के बहाने बुलाकर उसके साथ दुष्कर्म किया गया। शिकायत के बाद पुलिस ने मामला दर्ज किया और अब स्पेशल इन्वेस्टिगेशन टीम इस पूरे नेटवर्क की जांच कर रही है। बता दें कि पुलिस के मुताबिक खरात के खिलाफ जांच कर रहे विशेष जांच दल (एसआईटी) को पिछले कुछ दिनों में फोन पर 100 से अधिक शिकायतें मिली हैं, जिनमें से अधिकतर महिलाओं की हैं। खरात को पिछली पुलिस हिरासत अवधि समाप्त होने के बाद अदालत में पेश किया गया। सुनवाई के दौरान, लोक अभियोजक शैलेंद्र बागडे ने कहा कि मामले की जांच अभी जारी है और आरोपी सहयोग नहीं कर रहा है। उन्होंने कहा कि आरोपी की संपत्तियों की जांच अभी बाकी है। बागडे ने कहा कि कई महिलाएं अब भी शिकायत दर्ज कराने के लिए आगे आ रही हैं और उस तथाकथित 'पानी या तरल पदार्थ' की जांच अभी बाकी है, जिसे खरात यौन शोषण से पहले पीड़ितों को बहलाने-फुसलाने के लिए देते थे।

बताते चले कि अशोक खरात खुद को ऑस्ट्रेलियाई मर्चेंट नेवी का कैप्टन और कॉस्मोलॉजी एक्सपर्ट बताता था। उसने दावा किया है कि वो 154 देशों की यात्रा कर चुका है। वो 12 विदेशी भाषाएं जानता है। उसने 154 देशों में सबसे ज्यादा बार तुर्किए की यात्रा की है। उसने कहा कि वो पिछले 5 साल में 15 बार तुर्किए गया। वही पुलिस जांच में यह भी खुलासा हुआ है कि खरात के नाम पर 100 करोड़ से ज्यादा की सम्पति है। अशोक खरात ने करीब 20 साल पहले मर्चेंट नेवी से रिटायर होने के बाद ज्योतिष का काम शुरू किया था। धीरे-धीरे उसने इसे हाई-प्रोफाइल कंसल्टेंसी का रूप दे दिया। उसके क्लाइंट्स में नेता, बिल्डर, बड़े कारोबारी और चुनाव लड़ने वाले लोग शामिल बताए जाते हैं। पुलिस के मुताबिक वह निजी कंसल्टेशन के लिए लाखों रुपये तक फीस लेता था और कई मामलों में उसकी फीस 50 लाख रुपए तक बताई जा रही है। इसी मॉडल के जरिए उसने करोड़ों की संपत्ति खड़ी कर ली, जो अब जांच के दायरे में है। खरात ने 10-12 साल में करीब 1500 करोड़ रुपए का बेनामी साम्राज्य खड़ा किया। वह 'एल्विश हनी' नाम से शहद बेचता था, जिसके बारे में दावा किया गया है कि यह शहद तुर्किए की समुद्री गुफाओं से लाया गया है। शहद से यौन शक्ति बढ़ाने का दावा किया गया है। इसकी कीमत 9 लाख रुपए प्रति किलो तक रखी जाती थी। बता दें कि मुंबई, पुणे और नाशिक समेत इन 5 शहरों में खरात का नेटवर्क फैला हुआ है :-

सिन्नर (नासिक) : 3.5 एकड़ में 'श्री शिवनिका संस्थान', जहां तांत्रिक अनुष्ठान के लिए गुप्त कमरे बना

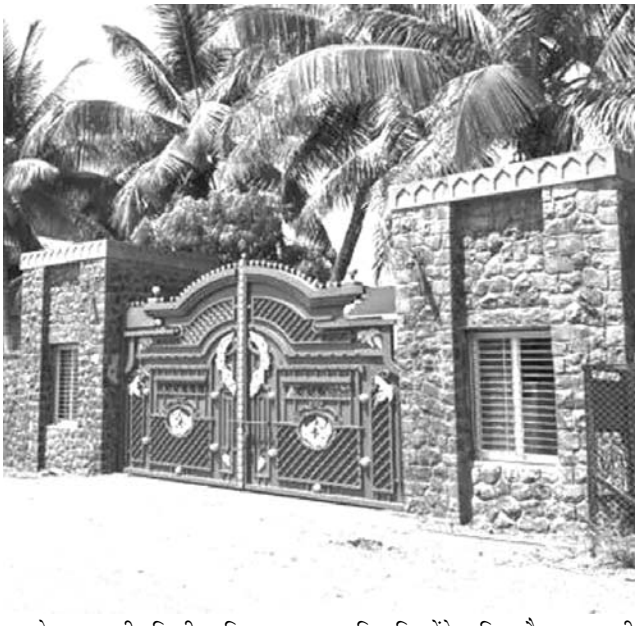

रखे हैं।

अहिल्यानगर : फार्महाउस में अघोरी विधि के सबूत, यहीं नरबलि की आशंका।

शिर्डी : युवती का अश्लील वीडियो बनाकर ब्लैकमेल का केस।

मुंबई : पांच सितारा होटलों में स्थायी सुइट, जहां डील और मुलाकातें होती थीं।

पुणे : बेनामी फ्लैट्स, रसूखदार क्लाइंट्स से मुलाकात।

बहरहाल, अशोक खरात ने करीब 20 साल पहले मर्चेंट नेवी से रिटायर होने के बाद ज्योतिष का काम शुरू किया था। धीरे- धीरे उसने इसे हाई-प्रोफाइल कंसल्टेंसी का रूप दे दिया। उसके क्लाइंट्स में नेता, बिल्डर, बड़े कारोबारी और चुनाव लड़ने वाले लोग शामिल बताए जाते हैं। पुलिस के मुताबिक वह निजी कंसल्टेशन के लिए लाखों

रुपए तक फीस लेता था और कई मामलों में उसकी फीस 50 लाख रुपए तक बताई जा रही है। इसी मॉडल के जरिए उसने करोड़ों की संपत्ति खड़ी कर ली, जो अब जांच के दायरे में है। वही दूसरी तरफ मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने विधानसभा में बताया कि आरोपी खरात ने महिलाओं को डर, अंधविश्वास और तंत्र-मंत्र के नाम पर प्रताड़ित किया। अब तक इस मामले में 8 मामले दर्ज किए जा चुके हैं। जिसमें 7 केस की एसआईटी जांच कर रही है, जबकि एक केस की जांच क्राइम ब्रांच कर रही है। फडणवीस ने कहा कि खरात की करीब 40 करोड़ की सम्पत्ति का खुलासा हुआ है। इसके साथ उसके खिलाफ 5 करोड़ की रंगदारी का भी मामला दर्ज हुआ है। 5 करोड़ की रंगदारी, एआई फोटो से ब्लैकमेल फडणवीस ने कहा कि जांच में सामने आया है कि आरोपी ने एक महिला को उसके फोटो वायरल करने की धमकी देकर 5 करोड़ रुपए की मांग की थी। 18 फरवरी 2026 को एआई के जरिए तैयार फोटो वायरल कर बाद में डिलीट कर दिए गए, जिससे सबूत जुटाने में दिक्कत आई। हालांकि पुलिस ने पीड़ित महिलाओं का काउंसलिंग कर उनकी पहचान गुप्त रखते हुए केस दर्ज किए हैं।

इसके साथ ही डिलीट किए गए सबूतों को दोबारा पाने का काम चल रहा है।

गौरतलब है कि महाराष्ट्र के नाशिक के तथाकथित बाबा और ज्योतिषि अशोक खरात पर कांग्रेस नेता विजय वडेट्टीवार ने गंभीर आरोप लगाए हैं। उन्होंने इस कांड को भारत की एस्परीन फाइल बताया और दावा किया है कि इस मामले का खुलासा हुआ तो सरकार पर बड़ा असर पड़ सकता

है।

उन्होंने यहां तक कहा है कि खरात के 39 विधायकों से संपर्क हैं और ये बड़े लोग खुद को बचाने के लिए खरात का बलि का बकरा बना सकते हैं। इतना ही नहीं, उन्होंने दावा किया कि ये भारत की एपस्रीन फाइल है और रसूखदार खुद को बचाने के लिए सबूतों को नष्ट कर सकते हैं या अशोक खरात को मरवा सकते हैं। वडेट्टीवार ने कहा कि खरात को कानून के तहत कड़ी सजा मिलनी चाहिए, साथ ही उन लोगों पर भी कार्रवाई होनी चाहिए जिन्होंने कथित तौर पर उसकी मदद की। उन्होंने मंत्री दीपक केसरकर के उस बयान का हवाला दिया, जिसमें 39 विधायकों के खरात से संपर्क में होने की बात कही गई थी। उन्होंने मांग की कि इन सभी विधायकों के खिलाफ आपराधिक मामले दर्ज किए जाएं और केसरकर से जुड़े नाम सार्वजनिक करने को कहा। वडेट्टीवार ने आरोप लगाया कि पूरे मामले को दबाने की कोशिश हो रही है और इसमें शामिल सभी लोगों, चाहे वे विधायक हों या मंत्री, की गहन जांच होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र में नासिक की एक अदालत ने बलात्कार के आरोप में गिरफ्तार स्वयंभू बाबा अशोक खरात की पुलिस हिरासत एक अप्रैल तक बढ़ा दी। खरात को 18 मार्च को उस वक्त गिरफ्तार किया गया था, जब एक महिला ने उस पर 3 साल से अधिक समय तक बार-बार बलात्कार करने का आरोप लगाया। खरात नासिक जिले के मिरगांव में एक मंदिर ट्रस्ट के प्रमुख हैं और वर्षो से उनसे महाराष्ट्र के कई प्रमुख राजनेता मिलते रहे हैं। शहर के सरकारवाड़ा पुलिस थाने में अब तक उनके खिलाफ 10 प्राथमिकी दर्ज की गई हैं, जिनमें से आठ कथित यौन उत्पीड़न या शोषण और दो धोखाधड़ी से संबंधित हैं।

Gujarat Passes Historic UCC Bill : Key Provisions, Rules & Impact

March 24, 2026, marked a historic day for the Gujarat Legislative Assembly, as the Uniform Civil Code (UCC) Bill was passed by a majority. Introduced by Chief Minister Bhupendra Patel, the bill was debated for nearly seven and a half hours in a marathon session. With its passage, Gujarat has become the second state after Uttarakhand to take a decisive step toward implementing a Uniform Civil Code.

Uniform Legal Framework for Marriage and Divorce

The bill introduces key provisions related to marriage and divorce. Registration of marriages will now be mandatory for people of all religions within 60 days, failing which a penalty of up to Rs.10,000 may be imposed. Additionally, any divorce granted without court approval will be considered invalid. The primary objective is to ensure legal protection for women and safeguard their rights.

Strict Registration Rules for Live-in Relationships

One of the most talked-about provisions in the Gujarat UCC Bill is the regulation of live-in relationships. Couples living together in the state will be required to register their relationship with the registrar within a specified timeframe. Failure to comply may result in up to three months of imprisonment or a fine. Furthermore, if either partner is below 21 years of age, their parents will be informed by authorities.

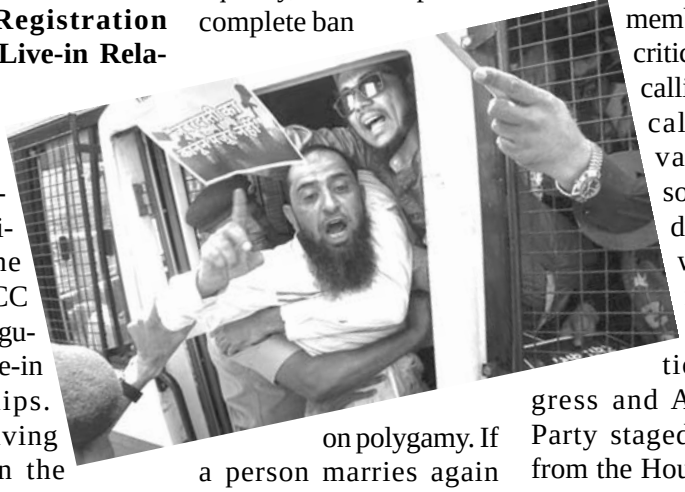

Ban on Polygamy and Equal Inheritance Rights

To promote social equality, the bill imposes a complete ban on polygamy. If a person marries again while their first spouse is still alive, they may face up to seven years in prison. In terms of property rights, both sons and daughters will now have equal inheritance rights in their father's property. However, the law will not apply to Scheduled Tribe (ST) communities in the state.

Opposition Protests and Next Steps

During the debate, opposition members strongly criticized the bill, calling it "politically motivated." After some of their demands were not met, members of Indian National Congress and Aam Aadmi Party staged a walkout from the House.

The bill will now be sent to the Governor for approval, followed by the President of India. It will come into force across Gujarat only after receiving final presidential assent.

● **अजित दूबे**

भारत की राजनीति में पश्चिम बंगाल का चुनाव हमेशा से सुर्खियों में रहा है, ऐसे में 2026 के अप्रैल में विधानसभा चुनाव के तारिखों का ऐलान हो चुका है। पश्चिम बंगाल के पटल पर अपना भगवा लहराने की कोशिश में जुटी भाजपा ऐड़ी-चोटी एक कर दी है, पर सवाल है कि पश्चिम बंगाल में दीदी (ममता बनर्जी) के चहेतों की कमी नहीं है और इसी का फायदा तृणमुल उठाती आयी है। हालांकि चुनाव आयोग के द्वारा एसआईआर के जरीये फर्जी वोटों पर तलवारे चली तो इसकी चीख सड़क तक आ गई और सर्वोच्च न्यायालय से लेकर सड़क तक ममता बनर्जी ने इसका विरोध किया। मोदी-शाह के साथ ही चुनाव आयोग पर आरोप-प्रत्यारोप लगाये गये। इन तमाम कोशिशों के बावजूद पश्चिम बंगाल की सत्ता क्या पुनः ममता दीदी के पास रहेगी, यह जंग अभी जारी है और सवालों के घेरे में है। बहरहाल, इस बार का विधानसभा चुनाव इतना आसान भी नहीं है और इसकी चिंता ममता बनर्जी को भलिभांती है।

गौरतलब है कि पश्चिम बंगाल में विधानसभा चुनाव 2026 से पहले केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने कोलकाता का दौरा किया। इसी बीच गृहमंत्री शाह ने बंगाल चुनाव को देश की सुरक्षा से जोड़ते हुए मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पर तंज कसते हुए तीखे आरोप लगाए। शाह ने कहा कि उन्होंने हमेशा विक्टिम कार्ड की पॉलिटिक्स खेली है, कभी उनका पैर टूट जाता है, कभी वे अपने सिर पर पट्टी बांध लेती हैं, कभी बीमार हो जाती हैं और कभी चुनाव आयोग के आगे बेचारा बनकर आयोग को ही गालियां देती हैं। गृहमंत्री शाह ने कहा कि पश्चिम बंगाल की जनता उनकी विक्टिम कार्ड की पॉलिटिक्स को बहुत अच्छे से समझ चुकी है। गृहमंत्री शाह ने कहा कि पश्चिम बंगाल की जनता उनकी विक्टिम कार्ड की पॉलिटिक्स को बहुत अच्छे से समझ चुकी है। चुनाव आयोग जैसी संवैधानिक संस्था को गाली देना यह बंगाल की संस्कृति को शोभा नहीं देता है। शाह ने जनता से अपील की कि वे तुष्टीकरण की राजनीति को छोड़कर विकास के रास्ते को चुनें। उन्होंने कहा कि यह चुनाव केवल सत्ता परिवर्तन का नहीं, बल्कि बंगाल की आत्मा को बचाने और इसे भयमुक्त बनाने का चुनाव है। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने बंगाल में होने वाले

विधानसभा चुनाव से पहले ममता बनर्जी के नेतृत्व वाली तृणमूल कांग्रेस सरकार के 15 सालों के शासनकाल की एक चार्जशीट जारी की, जिसमें उन्होंने राज्य में कानून-व्यवस्था, घुसपैठ और राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दों पर ममता सरकार की कड़ी आलोचना की। शाह ने दावा किया कि असम में पहले से भारतीय जनता पार्टी की सरकार है, जहां काफी हद तक घुसपैठ पर रोक लगाई जा चुकी है, लेकिन पश्चिम बंगाल अब भी एक संवेदनशील रास्ता बना हुआ है। उन्होंने कहा कि असम में घुसपैठ बंद हो चुकी है और अब घुसपैठियों के लिए सिर्फ बंगाल ही घुसने का रास्ता बचा है। शाह ने कहा कि टीएमसी के कुशासन में बंगाल भ्रष्टाचार की प्रयोगशाला बन चुका है।

बहरहाल, पश्चिम बंगाल की सत्ता की चाबी किसके हाथ लगेगी? 2026 के महासंग्राम से पहले 'वोट ट्रैकर' के पहले ओपिनियन पोल ने बंगाल की राजनीतिक फिजाओं में हलचल मचा दी है। क्या मुख्यमंत्री ममता बनर्जी एक बार फिर 'प्रचंड जीत' हासिल कर रही हैं या बंगाल में पहली बार भाजपा के 'कमल' के खिलने की बारी है। पोल के आंकड़े कुछ ऐसी कहानी बयां कर रहे हैं, जिसे देखकर राजनीतिक पंडित भी हैरान हैं। ओपिनियन पोल के मुताबिक, बंगाल में एक बार फिर 'खेला' होता दिख रहा है। टीएमसी न सिर्फ सत्ता में वापसी कर रही है, बल्कि 184 से 194 सीटें जीतकर विपक्ष का सूपड़ा साफ करती नजर आ रही है। वहीं, 200 पार का नारा देने वाली भाजपा 98 से 108 सीटों पर सिमटती दिख रही है। अन्य के खाते में महज 1 से 3 सीटें जाने का अनुमान है। बंगाल में टीएमसी और भाजपा के अलावा कांग्रेस और वामपंथी दल भी हैं। ओपिनियन पोल के मुताबिक मुख्यमंत्री पद के लिए लोगों की पहली पसंद दीदी यानी ममता बनर्जी ही हैं। ममता 48.5 प्रतिशत लोगों की मुख्यमंत्री के रूप में पहली पसंद हैं। जबकि, किसी समय ममता के सहयोगी रहे शुभेन्दु अधिकारी (अब भाजपा में) को 33.4 फीसदी लोग मुख्यमंत्री के रूप में देखना चाहते हैं। सीपीआई के मोहम्मद सलीम 4.3% और कांग्रेस के अधीर रंजन चौधरी 3.7 फीसदी लोगों की पसंद हैं। ओपिनियन पोल के मुताबिक 19.9% लोगों का मानना है कि आगामी विधानसभा चुनाव में भाजपा को आपसी कलह और गुटबाजी का नुकसान झेलना पड़ेगा। साथ ही भाजपा के पास ममता बनर्जी के कद का कोई

करिश्माई नेता नहीं है। जहां तक वोट शेयरिंग का मामला है, टीएमसी को 41.9 प्रतिशत वोट मिल सकते हैं, जबकि भाजपा को 34.9 फीसदी वोट मिल सकते हैं। वोट के मामले में भी भाजपा तृणमूल से पीछे दिखाई दे रही है। हालांकि 8 फीसदी के लगभग ऐसे

भी लोग हैं, जिनका कहना है कि अभी उन्होंने तय नहीं किया है कि वे किस वोट देंगे। वही ममता बनर्जी ने अपने 74 वर्तमान विधायकों को टिकट काटे हैं। उन्होंने इस सीटों पर नए चेहरों पर दांव लगाया है। हालांकि 36.5 फीसदी मतदाताओं का मानना है कि वे मौजूद विधायकों के पक्ष में वोट दे सकते हैं, जबकि 21. 5 फीसदी का मानना है कि वे मौजूदा विधायक को वोट नहीं देंगे, लेकिन पार्टी के दूसरे उम्मीदवार को वोट देंगे। 20 फीसदी से ज्यादा लोगों का मानना है कि इस बात की संभावना काफी कम है कि वे किसी दूसरी पार्टी के उम्मीदवार को वोट देंगे। दिगर बात है कि ऐसे में क्या होंगे प्रमुख चुनावी मुद्दे? हर चुनाव की तरह बंगाल में बेरोजगारी सबसे मुद्दा रहेगा। 37 फीसदी से ज्यादा बंगाली मतदाता बेरोजगारी को सबसे बड़ा मुद्दा मानता है। राज्य के 15.9 प्रतिशत महिला सुरक्षा और कानून व्यवस्था को प्रमुख मुद्दा मानते हैं। 10-10 फीसदी से ज्यादा लोग महंगाई और भ्रष्टाचार को भी चुनावी मुद्दा मानते हैं। उल्लेखनीय है कि वर्तमान में ममता बनर्जी की पार्टी के करीब 213 सीटें हैं, जबकि भाजपा के विधायकों की संख्या 77 है। इस लिहाज से ममता की सीटें तो घट सकती हैं, लेकिन उनका आंकड़ा बहुमत (148) से बहुत ज्यादा रहेगा। बंगाल में 23 अप्रैल और 29 अप्रैल 2026 को दो चरणों में मतदान होना है, जिसके नतीजे 4 मई 2026 को घोषित किए जाएंगे।

नीतीश कुमार के राज्यसभा जाने के मायने

● **अमित कुमार**

आखिरकार नीतीश कुमार ने अपनी दबी इच्छा को पूरा कर लिया और राज्यसभा चुनाव में जीत दर्ज कर दिल्ली की दोनो सदनों में पहले लोकसभा और अब राज्यसभा के भी सदस्य हो गये। 2005 से 2026 के अप्रैल तक का मुख्यमंत्री का लंबा सफर तय करके बिहार को वो हर कुछ दिया, जिसकी बिहार को जरूरत थी। अपराध नियंत्रण से लेकर बिहार के जर्जर सड़कों के निर्माण और महिलाओं की राजनीतिक हिस्सेदारी के साथ ही जनोपयोगी योजनाओं से लाभान्वित किया, जिसे बिहार की जनता नहीं भूलेगी। बिहार की राजनीति में हर वह धूरंधर राजनेताओं को मुंह ही खानी पड़ी, जिसने नीतीश कुमार से उनकी कुर्सी लेने की जिद् बनाये बैठी थी। अंतत: राज्यसभा जाने की अपनी दिली इच्छा को जाहीर करते हुए खुद ही नीतीश कुमार ने मुख्यमंत्री की कुर्सी त्याग दी, भले ही इसके पीछे सहयोगी भाजपा का कोई राजनीतिक दाव हो! खैर, बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार बीते दिनों सोशल मीडिया साइट एक्स पर अपनी पोस्ट में कहा कि राज्यसभा का सदस्य बनने जा रहा हूं। बिहार की नई सरकार को मेरा पूरा सहयोग और समर्थन रहेगा। नीतीश ने एक्स पर अपनी पोस्ट में कहा कि पिछले दो दशक से भी अधिक समय से आपने अपना विश्वास एवं समर्थन मेरे साथ लगातार बनाए रखा है तथा उसी के बल पर हमने बिहार की और आप सब लोगों की पूरी निष्ठा से सेवा की है। आपके विश्वास और समर्थन की ही ताकत थी कि बिहार आज विकास और सम्मान का नया आयाम प्रस्तुत कर रहा है। इसके लिए पूर्व में भी मैंने आपके प्रति कई बार आभार व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि संसदीय जीवन शुरू करने के समय से ही मेरे मन में एक इच्छा थी कि मैं बिहार विधान मंडल के दोनों सदनों के साथ संसद के भी दोनों सदनों का सदस्य बनूं। इसी क्रम में इस बार हो रहे चुनाव में राज्यसभा का सदस्य बनना चाह रहा हूँ। नीतीश ने कहा कि मैं आपको पूरी ईमानदारी से विश्वास दिलाना चाहता हूं कि आपके साथ मेरा यह संबंध भविष्य में भी बना रहेगा एवं आपके साथ मिलकर एक विकसित बिहार बनाने का संकल्प पूर्ववत कायम रहेगा। जो नई सरकार बनेगी उसको मेरा पूरा सहयोग एवं मार्गदर्शन रहेगा।

Nitish Kumar
@NitishKumar

Show translation

पिछले दो दशक से भी अधिक समय से आपने अपना विश्वास एवं समर्थन मेरे साथ लगातार बनाए रखा है, तथा उसी के बल पर हमने बिहार की और आप सब लोगों की पूरी निष्ठा से सेवा की है। आपके विश्वास और समर्थन की ही ताकत थी कि बिहार आज विकास और सम्मान का नया आयाम प्रस्तुत कर रहा है। इसके लिए पूर्व में भी मैंने आपके प्रति कई बार आभार व्यक्त किया है।

संसदीय जीवन शुरू करने के समय से ही मेरे मन में एक इच्छा थी कि मैं बिहार विधान मंडल के दोनों सदनों के साथ संसद के भी दोनों सदनों का सदस्य बनूँ। इसी क्रम में इस बार हो रहे चुनाव में राज्यसभा का सदस्य बनना चाह रहा हूँ।

मैं आपको पूरी ईमानदारी से विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि आपके साथ मेरा यह संबंध भविष्य में भी बना रहेगा एवं आपके साथ मिलकर एक विकसित बिहार बनाने का संकल्प पूर्ववत कायम रहेगा। जो नई सरकार बनेगी उसको मेरा पूरा सहयोग एवं मार्गदर्शन रहेगा।

10:54 AM · Mar 5, 2026 · **1,511** Views

बहरहाल, नीतीश कुमार का राज्यसभा जाने का फैसला अचानक नहीं बल्कि एक

सोची-समझी रणनीति और व्यक्तिगत इच्छा का हिस्सा माना जा रहा है। ज्ञात हो कि नीतीश कुमार ने स्वयं सोशल मीडिया पर साझा किया कि उनके मन में शुरू से ही संसद और विधानमंडल के सभी चारों सदनों (लोकसभा, राज्यसभा, विधानसभा और विधान परिषद) का सदस्य बनने की इच्छा थी। राज्यसभा जाने के साथ ही वे भारत के उन गिने-चुने नेताओं में शामिल हो जाएंगे, जिन्होंने इन चारों सदनों की सदस्यता प्राप्त की है। लब्बोलुआब है कि नवंबर 2025 में रिकॉर्ड 10वीं बार शपथ लेने वाले नीतीश कुमार बिहार के सबसे लंबे समय तक सेवा करने वाले मुख्यमंत्री हैं। नीतीश कुमार पिछले दो दशकों से बिहार की सत्ता की कमान संभाल रहे हैं। वे राज्य के सबसे लंबे समय तक मुख्यमंत्री रहने वाले नेता हैं। अब वे कार्यकारी भूमिका छोड़कर संसद में जाएंगे। उनका राज्यसभा जाना बिहार में एक बड़े नेतृत्व परिवर्तन का प्रतीक है। यह कदम संकेत देता है कि नीतीश कुमार अब राष्ट्रीय स्तर पर एनडीए के लिए रणनीतिक भूमिका निभा सकते हैं। दिल्ली में उनकी मौजूदगी गठबंधन को मजबूती प्रदान करेगी। वही यह कदम नीतीश को दिल्ली की राजनीति में मजबूत बनाने वाला माना जा रहा है, जहां वे रणनीतिक फैसलों में भूमिका निभा सकते हैं।

हालांकि राज्यसभा जाने की खबर आने के बाद जदयू कार्यकर्ताओं ने नीतीश के घर के बाहर जुटकर नारेबाजी की। जदयू कार्यकर्ताओं में इस फैसले को लेकर थोड़ा असंतोष और भावुकता जरूर है, लेकिन नीतीश कुमार ने आश्वासन दिया है कि वे नई सरकार का मार्गदर्शन करते रहेंगे। नीतीश कुमार ने स्पष्ट किया है कि नई सरकार उनके मार्गदर्शन में चलेगी। बिहार की सियासत अब नई दिशा ले रही है, जहां एनडीए गठबंधन की एकता और विकास की रफ्तार पर सबकी नजर है। नीतीश कुमार के इस्तीफे के बाद नया सीएम कौन होगा का मंथन जारी है। सूत्रों के अनुसार, इस बार बीजेपी कोटे से सीएम बन सकता है, क्योंकि 2025 चुनाव के बाद में बीजेपी सदन में सबसे बड़ी पार्टी है। इससे बिहार में पहली बार बीजेपी का मुख्यमंत्री बनेगा। बिहार की सियासत अब उस मोड़ पर है जहां पहली बार बीजेपी ड्राइविंग सीट पर होगी और नीतीश कुमार दिल्ली से बिहार के विकास के संकल्प को आगे बढ़ाएंगे। राज्यसभा के लिए विधानसभा में नीतीश कुमार के नामांकन के दौरान गृह मंत्री अमित शाह और बीजेपी अध्यक्ष नितिन नवीन की उपस्थिति ने यह साफ कर दिया है कि यह बदलाव आपसी सहमति और भविष्य की बड़ी रणनीति का हिस्सा है। दूसरी तरफ कयास लगाए जा रहे हैं कि नीतीश कुमार अपने बेटे निशांत कुमार के लिए राजनीतिक जमीन तैयार कर रहे हैं। चर्चा है कि उन्हें नई सरकार में कोई बड़ी जिम्मेदारी या उपमुख्यमंत्री का पद निशांत को मिल सकता है।

गौरतलब है कि राज्यसभा की 37 सीटों पर हुए चुनाव के परिणामों से एक बार फिर विपक्षी एकता को तगड़ा झटका दिया है। भाजपा की अगुवाई वाले एनडीए ने 22 सीटों पर जीत हासिल कर

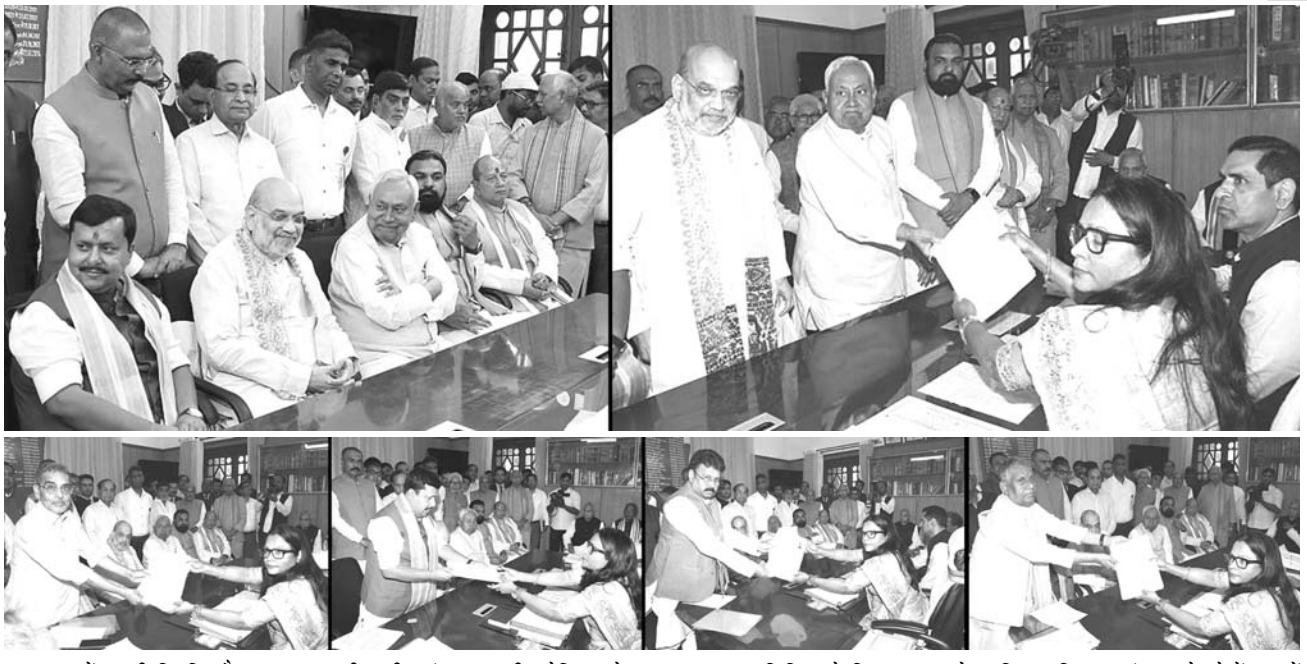

राज्यसभा में अपनी स्थिति और मजबूत कर ली। इसमें भाजपा को 13 और उसके सहयोगी दलों के 9 उम्मीदवार जीते। वहीं राज्यसभा चुनाव में विपक्ष को सिर्फ 15 सीटों पर ही जीत हासिल हो सकी। राज्यसभा चुनाव में बिहार, हरियाणा और उड़ीसा में 11 सीटों पर वोटिंग के जरिए फैसला हुआ, जिसमें भाजपा और उसके सहयोगी दलों ने 9 सीटों पर जीत हासिल की, वहीं विपक्षी दल सिर्फ 2 सीटों पर जीत दर्ज कर सका। वही बिहार में एनडीए ने सभी 5 सीटों पर जीत हासिल की। बिहार में भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए ने राज्यसभा चुनाव में जिस तरह से सभी पांच सीटों पर जीत हासिल की उससे एक बार फिर उसके चुनावी मैनजेमेंट ने सभी को चौंका दिया है। बिहार में संख्या बल के आधार पर एक सीट आरजेडी के खाते में जाने की पूरी संभावना थी लेकिन ऐन वक्त पर आरजेडी के विधायक फैसल रहमान और 3 कांग्रेस विधायक सुरेंद्र प्रसाद, मनोहर प्रसाद सिंह और मनोज विश्वास के वोटिंग से गैर हाजिर होने से आरेडी उम्मीदवार ए.डी. सिंह को हार का सामना करना पड़ा। वहीं भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन, बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, रालोमो नेता उपेंद्र कुशवाहा, रामनाथ ठाकुर के साथ शिवेश राम भी चुनाव जीत गए। बिहार में राज्यसभा चुनाव में आरजेडी उम्मीदवार की हार इंडिया गठबंधन की एकता को भी बड़ा झटका है। राज्यसभा चुनाव में कांग्रेस और आरजेडी के बीच समन्वय और तालमेल में कमी देखने को मिली।

विदित हो कि भाजपा के समर्थन से दसवीं बार बिहार के मुख्यमंत्री पद की शपथ लेकर एक कीर्तिमान स्थापित करने वाले नीतीश कुमार राज्यसभा चुनाव जीत चुके हैं, इसके लिए उन्होंने यह हास्यास्पद तर्क दिया है कि वे बिहार विधान मंडल के दोनों सदनों

के सदस्य बनने के साथ ही संसद के भी दोनों सदनों के सदस्य बनने की वर्षों पुरानी साध को पूरा करना चाह रहे हैं। पिछले दिनों राज्यसभा सीट के नामांकन दाखिल करने से जब उनकी पार्टी के कार्यकर्ता अत्यधिक व्याकुल हो गये तब नीतीश कुमार ने आखिरकार वह रहस्योद्घाटन कर ही दिया जो अब तक जदयू के कार्यकर्ताओं के गले नहीं उतर रहा है। नीतीश कुमार ने बताया कि उनके मन में वर्षों से यह उत्कंठा बनी हुई थी कि वे बिहार विधान मंडल के दोनों सदनों की सदस्यता के साथ ही संसद के भी दोनों सदनों की सदस्यता अर्जित करने का कीर्तिमान स्थापित करें। राज्यसभा सीट के लिए दाखिल करने का फैसला नीतीश कुमार ने अपनी इस अधूरी साध को पूरा करने की मंशा से किया है। इस तर्क को जदयू के कार्यकर्ता तो क्या कोई भी स्वीकार नहीं कर पा रहा है। उनका मानना है कि मुख्यमंत्री की कुर्सी छोड़कर राज्यसभा में बैठने का फैसला नीतीश कुमार ने भाजपा के दबाव में आकर किया है जिससे पार्टी कार्यकर्ताओं का मनोबल टूटना स्वाभाविक है लेकिन नीतीश कुमार उन्हें यह कह कर सांत्वना दे रहे हैं कि राज्यसभा का सदस्य बन जाने के बाद भी बिहार की राजनीति पर उनकी नजर बराबर बनी रहेगी और वे जदयू के हितों को संरक्षण प्रदान करते रहेंगे। दरअसल पिछले साल संपन्न हुए बिहार विधानसभा चुनावों में जब भाजपा ने जदयू से अधिक सीटें जीतने के बावजूद नीतीश कुमार को मुख्यमंत्री का ताज धारण करने का सौभाग्य प्रदान किया था तभी इस उलटफेर की पटकथा लिखी जा चुकी थी। बस भाजपा उचित अवसर

की प्रतीक्षा कर रही थी। उधर कुर्सी की राजनीति के चतुर खिलाड़ी नीतीश कुमार भी उसी समय इस कड़वी हकीकत का अंदाजा लगा चुके थे कि अब भाजपा से बड़े भाई का सम्मान मिलने की उम्मीद उन्हें हमेशा हमेशा के लिए छोड़ देना चाहिए। यही कारण है कि उन्होंने मुख्यमंत्री की कुर्सी का मोह त्याग कर राज्यसभा में जाने का विकल्प स्वीकार कर लिया। अब यह उत्सुकता का विषय है कि राज्यसभा में पहुंचने के बाद केंद्र में उनकी क्या भूमिका होगी। इतना तो तय है कि नीतीश कुमार अपनी कोई शर्त पेश करने की स्थिति में नहीं रह गए हैं। दरअसल भाजपा की शर्तों पर राजनीति करने की मजबूरी में तो वे ढ़ाई साल पहले ही आ गए थे जब उन्होंने राजद से संबंध तोड़कर भाजपा के सहयोग से 9वीं बार मुख्यमंत्री पद की शपथ ग्रहण की थी। उसके बाद उनके नेतृत्व में जब एनडीए बिहार विधानसभा के चुनाव में उतरा तो भाजपा ने अपने रणनीतिक कौशल का इस्तेमाल करके सभी घटक दलों में सीटों का बंटवारा कुछ इस तरह किया कि नवनिर्वाचित विधान सभा में भाजपा ने सबसे बड़ी पार्टी के रूप में प्रवेश करने में सफलता अर्जित की और नीतीश कुमार की पार्टी दूसरे स्थान पर रही। उसके बावजूद भाजपा ने अपनी रणनीति के तहत नीतीश कुमार को मुख्यमंत्री की कुर्सी से उपकृत किया लेकिन दसवीं बार मुख्यमंत्री पद की शपथ लेकर नीतीश कुमार ने उस समय भले ही एक कीर्तिमान स्थापित कर लिया था परंतु उनके चेहरे पर वह चमक नहीं थी जो उन्होंने कभी सुशासन बाबू के रूप में अर्जित की थी। दरअसल वह चमक तो मुख्यमंत्री के रूप में उनके पहले कार्यकाल के बाद ही धीरे-धीरे फीकी पड़ने लगी थी। अब तो बिहार में उनकी एकमात्र पहचान यही है कि मुख्यमंत्री की कुर्सी के लिए वे आत्म-सम्मान से समझौता करने से उन्हें गुरेज नहीं है। लेकिन अब उन्हें इस हकीकत को स्वीकार कर लेना चाहिए कि बिहार के मुख्यमंत्री के रूप में यह उनका अंतिम कार्यकाल है। भाजपा के द्वारा अपनी रणनीति के तहत यह संदेश दिया जा है कि उसने नीतीश कुमार को मुख्यमंत्री पद छोड़ने के लिए विवश नहीं किया बल्कि नीतीश कुमार खुद ही राज्यसभा जाने की इच्छा रखते हैं लेकिन सभी जानते हैं कि अंदरखाने की बात कुछ और है। इसमें दो राय नहीं हो सकती कि नीतीश कुमार अगर अपने स्वास्थ्य कारणों से मुख्यमंत्री पद छोड़ने की मंशा जाहिर करते तो शायद उनका वह तर्क कहीं अधिक स्वीकार्य होता और उस पर आसानी से भरोसा भी कर लिया जाता।

बहरहाल अभी यह सुनने में आ रहा है कि राज्यसभा सदस्य बनने के बाद भी नीतीश कुमार एकदम मुख्यमंत्री पद नहीं छोड़ेंगे। बहुत संभव है कि वे मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देने के लिए तत्काल तैयार न हों। मुख्यमंत्री रहते हुए ही भाजपा को इस बात के लिए राजी करने में कोई कसर बाकी नहीं रखेंगे कि भाजपा के मुख्यमंत्री के नेतृत्व में बनने वाली नयी सरकार में संख्या बल के हिसाब से जदयू की न केवल भाजपा के बराबर भागीदारी हो बल्कि जदयू कोटे से जो मंत्री बनाए जाएं उन्हें महत्वपूर्ण पोर्टफोलियो भी मिलें। नीतीश कुमार केंद्र में जाने के पहले न केवल जनता दल यूनाइटेड की बागडोर अपने बेटे निशांत कुमार को सौंपना चाहेंगे बल्कि भाजपा के मुख्यमंत्री के नेतृत्व में बनने वाली नयी सरकार में भी अपने बेटे को उपमुख्यमंत्री पद पर प्रतिष्ठित होते देखने की महत्वाकांक्षा भी उनके मन में अवश्य होगी। नीतीश कुमार के राज्यसभा में जाने से निराश जदयू कार्यकर्ता भी निशांत कुमार को पार्टी की बागडोर सौंपे जाने के पक्ष में हैं। बिहार में पहली बार अपना मुख्यमंत्री बनाने जा रही भाजपा के सामने भी यह चुनौती अवश्य है कि नीतीश कुमार के कट्टर समर्थक मतदाता उससे दूर न जाने पाए। यह चुनौती आसान नहीं है परन्तु जिस तरह भाजपा ने सधे हुए कदमों से आगे बढ़ते हुए अधिकांश राज्यों में अपने को स्थापित कर लिया है उसे देखते हुए यह मान लेना चाहिए कि बिहार में उसने नये युग की शुरुआत कर दी है। बिहार में उसने अपने रणनीतिक कौशल से उस राजनेता की सत्ता से विदाई तय कर दी है। जिसने अपने मन के किसी कोने में देश का प्रधानमंत्री बनने की महत्वाकांक्षा पाल रखी थी। गौरतलब है कि 2013 में जब भाजपा ने देश के सबसे लोकप्रिय नेता के रूप में नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार के रूप में प्रोजेक्ट करने का फैसला किया था तब नीतीश कुमार ने उस फैसले से कुपित होकर एक झटके में एनडीए से अपनी पार्टी के 19 साल पुराने संबंध तोड़ दिए थे। नीतीश कुमार को बाद में अपने फैसले पर पश्चात्ताप हुआ और वे फिर एनडीए में लौट आए लेकिन इसके पहले वे यह घोषणा भी कर चुके थे कि भाजपा के विरुद्ध माहौल बनाने के लिए देश भर का दौरा करेंगे लेकिन

नीतीश कुमार को यूपीए में अपनी महत्वाकांक्षाएं पूरी न होने से उन्होंने उससे भी दूरी बना ली और कभी भाजपा, कभी विपक्षी महागठबंधन से जुड़कर मुख्यमंत्री की कुर्सी पर काबिज रहने में कामयाब होते रहे। परंतु अब बाजी पलट चुकी है। अब उन्हें उस भाजपा की शर्तों पर राजनीति करनी होगी जिसने उत्तर प्रदेश में मायावती की बसपा और महाराष्ट्र में उद्धव ठाकरे की शिवसेना के सामने अस्तित्व का संकट पैदा कर दिया है। यही हाल देश के कई राज्यों में क्षेत्रीय दलों का हो चुका है।

बिडम्बना देखिए, बेदाग छवि और लोकप्रियता के चरम पर विराजमान ये वही नीतीश कुमार हैं, जो सार्वजनिक मंचों से अक्सर लालू प्रसाद यादव पर परिवार को प्रश्रय देने और केवल उनकी ही चिंता करने को लेकर तंज कसते थे। वे राहुल गांधी और तेजस्वी यादव जैसे नेताओं को परिवारवाद का अवतार कहते थे। हालांकि, नीतीश कुमार ने भले ही अपने परिवार को राजनीति में नहीं बढ़ाया, परंतु दूसरे राजनेताओं के बेटे-बेटियों और पत्नियों को तो बढ़ाया ही। इससे पहले 'फ्री बीजली' के मामले पर नीतीश पलट ही चुके हैं, तभी तो उन्होंने राज्य में सवा सौ यूनिट मुफ्त बिजली देने की घोषणा की। जबकि, इसे लेकर आम आदमी पार्टी की वे खूब आलोचना करते थे। जेडीयू ने निशांत के पदार्पण को युवा सोच, मजबूत संकल्प की संज्ञा दी है और कहा है कि अब युवा सोच से बदलाव की नई बयार बहेगी, यह ऐतिहासिक और नया सूर्योदय है। जेडीयू के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष संजय कुमार झा ने सोशल मीडिया पोस्ट में कहा कि निशांत कुमार का पार्टी में औपचारिक रूप से शामिल होना केवल एक सदस्यता नहीं, बल्कि एक समृद्ध राजनीतिक और सामाजिक विरासत के नए वाहक का आगमन है। वहीं, पार्टी की सदस्यता ग्रहण करने के बाद निशांत कुमार ने कहा कि वह अपने पिता नीतीश कुमार के मार्गदर्शन में पार्टी को संगठन को मजबूत करने और उनके विकास कार्यों व उपलब्धियों को जन-जन तक पहुंचाने की कोशिश करेंगे। बीते दिनों लंबे-चौड़े काफिले में हाथी, घोड़ा, ऊंट और बैंड-बाजे के साथ फूलों की बारिश व रंग-गुलाल के बीच निशांत की पार्टी दफ्तर में एंट्री हुई। जेडीयू के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष संजय कुमार झा ने उन्हें सदस्यता ग्रहण कराई। हालांकि, नीतीश कुमार ने पूरे आयोजन से दूरी बनाए रखी। सदस्यता लेने के बाद निशांत पिता से मिले और उनसे आशीर्वाद लिया। राजनीतिक जीवन के आखिरी पड़ाव पर आखिरकार नीतीश भी वंशवाद के बेल की लपेट में आ ही गए। निशांत को सक्रिय राजनीति में लाने की मांग पार्टी का एक तबका काफी पहले से कर रहा था। नीतीश कुमार इससे हिचकते रहे थे। उनके राज्यसभा जाने का निर्णय करने के साथ पार्टी में एक वैक्यूम की स्थिति तो उत्पन्न हो ही गई थी। इसी कारण पार्टी के नेता-कार्यकर्ता विरोध भी कर रहे थे। शायद यही उचित अवसर लगा होगा या यह महसूस हुआ होगा कि निशांत में उनका वोट बैंक नीतीश कुमार की अक्स देखकर उनके साथ इटैक्ट रहेगा। बीजेपी इतना तो समझती ही है कि अगर जेडीयू में बिखराव हुआ तो बिहार में सत्ता हाथ से फिसल जाएगी। क्योंकि नीतीश का वोट बैंक उनके साथ ही आएगा, इसकी कोई गारंटी नहीं है। वहीं नीतीश कुमार का स्वास्थ्य अब साथ नहीं दे रहा। उन्हें पार्टी की जितनी चिंता सता रही, उतने ही उन नेताओं को भी सता रही होगी जो उनके वोट बैंक की सीढ़ी चढ़कर सत्ता का सुख भोग रहे हैं। उनके लिए जेडीयू को बचाए रखना नितांत जरूरी है, तभी उनकी सार्थकता भी बनी रहेगी। निशांत के अलावा किसी और को उनका पारंपरिक वोट बैंक स्वीकार नहीं करता।

बेटे निशांत के साथ नीतीश कुमार

गौरतलब है कि स्वास्थ्य खराब होने के बावजूद जनाधार उनके पक्ष में है। बीजेपी भली-भांति जानती है कि नीतीश कुमार के वोट बैंक या उनके विधायकों को अपने पक्ष में करने की कोशिश करना काफी रिस्की है और उसके पास राजनीतिक समीकरण के अनुसार उस कद का नेता भी नहीं है। इसलिए, निशांत का राजनीति में आना नीतीश कुमार का पुत्र मोह नहीं, बल्कि पार्टी को बिखरने से बचाने का प्रयास ही दिखता है। वही हाल के दिनों में बदले राजनीतिक घटनाक्रम

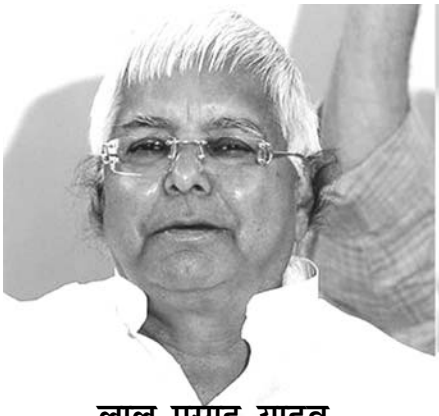

लालू प्रसाद यादव

नीतीश कुमार

रामविलास पासवान

तेजप्रताप यादव एवं तेजस्वी यादव

निशांत कुमार

चिराग पासवान

के बीच जेडीयू में असंतोष भी तेजी से उभरा है। कुछ नेताओं को निशाने पर लेकर विरोध प्रदर्शन किया गया। इस असंतोष को जल्द से जल्द दबाने के लिए निशांत को पार्टी में लाकर उन्हें नीतीश कुमार की जगह खड़ा करने की कोशिश की गई। अगर पुत्र मोह होता तो नीतीश कुमार इतना लंबा इंतजार क्यों करते। बहरहाल, निशांत के जेडीयू में शामिल होने के साथ ही नीतीश कुमार भी परिवारवाद के मोर्चे पर अपवाद की जगह सामान्य की श्रेणी में आ गए। वह उन्हीं राजनेताओं की कतार में आ गए, जिनके बेटे-बेटी उनकी विरासत संभालने के नाम पर राजनीति में आए। पॉलिटिकल पार्टियां तो यही नैरेटिव ही गढ़ रही हैं कि परिवारवाद से ही पार्टी का भला हो सकता है। उनके बेटे-बेटी ही पार्टी को संभाल सकते हैं। इसलिए तो निशांत कुमार को डिप्टी सीएम बनाने की बात चल रही है। क्या जेडीयू में निशांत से काबिल कोई और नेता नहीं हैं। दरअसल, खासकर रीजनल पार्टियों में यह परंपरा चली ही नहीं आ रही बल्कि और मजबूत हो रही कि उनके क्षत्रप की संतान ही उनकी विरासत को संभालेगी। उनके प्रतिद्वंदियों को भी यह भाता ही है। एक तरह से उनकी यह मजबूरी भी है। क्योंकि उनका वोट बैंक तो उनसे ही इंटरैक्ट करता है। जब तक उनका काम होता रहता है, तब तक सब कुछ ठीक रहता है। किसी कारणवश जैसे ही कमान दूसरी पंक्ति के नेता को दी जाती है तो उपेक्षा का भाव जागृत होने में देर नहीं लगती है और फिर असंतोष उपजता है।

विदित हो कि 1970 के दशक में छात्र आंदोलन से निकले लालू प्रसाद यादव, नीतीश कुमार और रामविलास पासवान ऐसे नेता रहे, जिन्होंने सामाजिक न्याय के नारे के साथ राजनीति कर बिहार के राजनीतिक- सामाजिक परिदृश्य को बदल कर रख दिया। 1990 में लालू प्रसाद के मुख्यमंत्री बनने के साथ बिहार में सामाजिक बदलाव का दौर शुरू हुआ। इसमें कोई दो राय नहीं कि उन्होंने वर्षों से हाशिये पर पड़े शोषितों-वंचितों को आवाज दी। उनके शासनकाल को सामाजिक न्याय का चरम माना जा सकता है। लेकिन, 1997 में अपनी सत्ता पर संकट आने पर उन्होंने उस परिवारवाद का ही सहारा लिया, जिसका विरोध कर समाजवाद की राजनीति की नींव रखी थी। पशुपालन घोटाला में जेल जाने की नौबत आने पर उन्होंने अपनी पत्नी राबड़ी देवी को मुख्यमंत्री बना दिया था। उस वक्त भी नीतीश कुमार ने लालू के इस निर्णय पर तंज कसा था। लालू ने बाद में परिवारवाद को भली-भांति सींचा और अपने बेटे तेजप्रताप और तेजस्वी तथा बेटियों, मीसा भारती और रोहिणी आचार्य को राजनीति में उतार दिया। आरजेडी की कमान अंततः उन्होंने अपने छोटे पुत्र तेजस्वी यादव को सौंप दी। विरासत के खेल में ही उनके बड़े पुत्र तेजप्रताप परिवार से अलग हो गए और पिता को किडनी देने वाली बेटी रोहिणी भी नाराज चल रहीं। राजनीति के मौसम वैज्ञानिक कहे जाने वाले और खासकर दलितों की राजनीति करने वाले रामविलास पासवान ने भले ही सार्वजनिक मंचों से परिवारवाद पर जमकर प्रहार किया, किंतु राजनीति में अपने भाइयों को ही बढ़ाया। उनके भाई ही विधायक, सांसद व मंत्री बने। हालांकि, परिवार में एकता नहीं रहने से उनकी पार्टी दो फाड़ हो गई। उनके बेटे चिराग पासवान आज उनकी विरासत को आगे बढ़ा रहे। वे आज केंद्रीय मंत्री हैं। इस कड़ी में अब तक नीतीश कुमार ही ऐसे थे, जो हर मंच पर परिवारवाद पर घोर प्रहार करते थे। बेटे का व्यामोह हो या फिर पार्टी को एकजुट रखने की कवायद, आखिरकार उन्होंने भी साल भर की ना-नुकुर के बाद बेटे को राजनीति को उतार ही दिया। जाहिर है, अब नेतृत्व शून्यता को भरने के साथ ही निशांत कुमार पर पार्टी ही नहीं, जनाधार बचाने की भी जिम्मेदारी होगी। जिनके बदौलत नीतीश कुमार बीते 21 साल से बिहार की राजनीति की धुरी बने रहे। उन्हें खुद को पिता की तरह ही 'परिवार पहले नहीं, बिहार पहले' वाला नेता साबित करना होगा।

Jharkhand Mechanic Converts Maruti 800 into Lamborghini, Internet Amazed

In an inspiring story of passion and craftsmanship, Mohammad Arif 'Tarzan' from Chandil in Jharkhand's Seraikela-Kharsawan district has transformed an old Maruti 800 into a stunning replica of a Lamborghini Aventador. Built over two years at a cost of nearly Rs 4 lakh, the modified car leaves onlookers stunned and has gone viral on social media. Crafted in his modest Tarzan Garage, the car has become a symbol of desi innovation and dedication.

Inspired by 'Tarzan: The Wonder Car'

For many who grew up in the late 1990s and early 2000s, Tarzan: The Wonder Car was more than just a movie — it was a dream. Arif was one of those dreamers. Working as a car mechanic for over a decade, he always aspired to build his own "Tarzan car." So deep was his passion that he adopted the nickname "Tarzan." That childhood dream finally took shape when he decided to reimagine a humble Maruti 800 into a supercar-inspired masterpiece.

Two Years of Hard Work, Built by Hand

Instead of relying on a big factory or advanced workshop, Arif worked out of his small garage. Over two years, he personally handled everything — from body cutting and welding to detailing and finishing touches. Only a few components like the music system, LED lights, and windshield were sourced externally. The rest of the transformation was completed with his own hands, skill, and creativity.

Features That Turn Heads

Whenever the car hits the road, traffic slows down as people stop to take pictures. Its features rival those of high-end luxury cars :-

Supercar Styling : Sharp, aggressive bodywork inspired by the Lamborghini Aventador

Sporty Interior : Two-seater configuration with racing-style seats

16-inch Wide Alloy Wheels : Designed for a bold road presence

Roaring Exhaust : Produces a supercar-like growl on startup

Premium Additions :- Sunroof, remote locking system, and high-fidelity music setup

The visual impact is so convincing that many mistake it for a real Lamborghini at first glance.

Viral Sensation Across Borders

Arif's 'Made-in-India Lamborghini' is no longer limited to Chandil. Reels and videos of the car have garnered millions of views online. Admirers from across India — and even abroad — have praised his engineering skills and artistic vision. What started as a childhood dream inspired by a film has now become a viral success story, proving that talent and determination can turn even the simplest machine into a show-stopping masterpiece.

Man Dies After Rasgulla Gets Stuck in Throat at Wedding

A joyful wedding celebration in Jamshedpur turned tragic after a 41-year-old man reportedly died from choking on a rasgulla. The deceased, identified as Lalit Singh, had attended a wedding ceremony in Malianta village on Monday morning. While enjoying the feast, he consumed a rasgulla, but within seconds began experiencing severe difficulty in breathing. Family members present at the scene immediately tried to remove the sweet from his throat, but their attempts failed. He was rushed to MGM Hospital, where doctors declared him dead on arrival.

According to medical experts, the rasgulla completely blocked his airway, cutting off oxygen supply to the body. Doctors stated that he died within minutes due to suffocation. A relative present at the scene said Singh's face turned pale and he began gasping for breath. Despite being taken to the hospital quickly, his life could not be saved.

What Doctors Say

Medical professionals explained that choking occurs when food blocks the windpipe, preventing oxygen from reaching the lungs. Normally, a flap called the epiglottis closes over the windpipe while swallowing, ensuring food goes into the food pipe. However, swallowing large or solid food items—such as rasgulla, laddoo, or rice balls—too quickly or whole can cause them to get stuck in the throat. In severe cases, this can completely block the airway and become life-threatening within minutes. The incident has left the family in shock, turning what was meant to be a celebration into mourning.

दिल्ली की खूनी होली

त्यौहार पर साम्प्रदायिक हत्या

● संजय कुमार सिन्हा

तरुण खटीक की मौत एक कमजोर कर रहे सनातन संस्कृति व्यवस्था का परिणाम माना जा सकता है, पहले हिन्दुओं को जाति में बाटो, फिर उन्हें वर्ग (कटेगरी) में, फिर उनके भावनाओं को भरकाने वाली सरकारी व्यवस्था, भले वो कमजोर गरीब चमार हो या ब्राह्मण सभी के मन में एक दूसरे के प्रति विकृत सोच और घृणा पनपने लग जाती है। इसका परिणाम समाज के बच्चे गली मुहल्ले से ही एक दूसरे के प्रति नफरत करने लग जाते हैं। आप समरसता की बातें कितने भी क्यों न करें? कहीं न कहीं ये दिखावा हो जाता है। आज वरुण खटीक नहीं बल्कि वरुण हिन्दू की नृशंस हत्या की 10 दिन हो चुके हैं पर न कोई रावण, न कोई चन्द्रशेखर आजाद उसके विलखती व कलपत्ती माँ के आंसू पोछने नहीं आया? हिन्दू या कहें तो राष्ट्र को कमजोर करने वाले कितने भी सरकार यूजीसी एवं एससी एसटी कानून क्यों न बना ले! हिन्दू एक रहेगें, ये स्पष्ट वरुण खटीक के हत्या से साफ हो जाता है। सनातन संस्कृति कभी कमजोर नहीं हो सकती सनातन संस्कृति सभी धर्म को अपना मानती है एवं समान भी करतीं हैं। वरुण खटीक अनुसूचित जाति बाद में है पहले हिन्दू हैं, आज सभी जाति के लोगों ब्राह्मण वैश्य क्षत्रिय जाट हो या जाटव सभी वरुण खटीक के मां के साथ है और न्याय की मांग कर रहे हैं। अब इस घटना की विस्तृत चर्चा करते हैंद्य देश की राजधानी दिल्ली के उत्तम नगर में 4 मार्च होली के दिन होली खेल रही 9 साल की बच्ची को नहीं मालूम था कि वह अपने ही परिवार के सदस्य पर जो पानी का गुब्बारा फेंक रही है, उसके छींटे किसी को इतने गंदे इस वैश्विक युग में लगेगें, जब सऊदी अरब यूएई में हिन्दू मंदिर की स्थापना एवं दिवाली होली का त्यौहार मनाई जा रहीं हैं। गुब्बारे

के छिट्टे ने इलाके में सांप्रदायिक तनाव का कारण बन जाएंगे। उस 9-10 वर्ष की बच्ची को नहीं पता था कि वह गुब्बारा उसके परिवार के लिए काल साबित होगा, जिसकी चपेट में उसका पूरा परिवार आ जाएगा। उसे यह भी नहीं मालूम था कि उस गुब्बारे से निकले पानी की वजह से परिवार ना केवल एक अनचाहे विवाद में पड़ जाएगा, बल्कि उसके परिवार के 25 साल के भाई तरुण की जान भी चली जाएगी। दिल्ली शहर के उत्तम नगर की जेजे कॉलोनी में होली की रात हुए एक ऐसे विवाद की, जिसने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया है।

इस विवाद की शुरुआत एक महिला पर रंग वाले पानी के छींटे लगने से हुई। उस लड़की ने अपने घर के नीचे खड़े अपने रिश्तेदारों पर एक पानी का गुब्बारा फेंका था, जो सड़क पर जा गिरा और फट गया, जिसके बाद रंगीन पानी के कुछ छींटे पड़ोस में रहने वाले दूसरे समुदाय की एक महिला को जा लगे। जिसके बाद हुए विवाद में हिंदू परिवार के युवक की जान

चली गई। इस मामले में पुलिस ने अभी तक एक दर्जन लोगों को गिरफ्तार कर लिया, साथ ही एक नाबालिग को भी हिरासत में लिया। जबकि घटना में शामिल अन्य लोगों की पहचान करने और उन्हें पकड़ने के लिए पुलिस लगातार छापेमारी कर रही है। साथ ही व्याप्त तनाव को देखते हुए पुलिस कोई कोताही नहीं बरत रही है और अतिरिक्त सुरक्षा बलों को तैनात करते हुए इलाके में कड़ी सुरक्षा की गई है। रंग के छींटे लगते ही गालियां देने लगी महिला। दरअसल गुब्बारे में भरे पानी के छींटे लगने के बाद पड़ोस में रहने वाली वह महिला ना केवल भड़क गई, बल्कि उसने गंदी-गंदी गालियां देकर विवाद करना शुरू कर दिया। इसी दौरान उसने अपने परिजनों व अपने समुदाय के अन्य लोगों को बुला लिया और होली खेल रहे परिवार पर हमला किया। इस दौरान 8 से 10 आरोपियों ने वहां मारपीट करते हुए जमकर तोड़फोड़ भी की। पीड़ित परिवार ने जैसे-तैसे अपने आप को घर के अंदर बंद करते हुए उनसे बचाया, इस झगड़े के दौरान परिवार का सदस्य तरुण अपने दोस्त के घर गया हुआ था और वो इस झगड़े से बेखबर था। जब तरुण रात करीब 10.30 बजे अपने दोस्त के घर से वापस लौट रहा था, इसी दौरान रास्ते में करीब कमसे कम 20 से 40 आरोपियों ने उसे घेर लिया और उसके साथ मारपीट शुरू कर दी। इस दौरान आरोपियों ने लाठी, पत्थर और लोहे की रॉड से तरुण को बेरहमी से पीटा। जब वह बेसुध हो गया तो एक बड़ा सा पथ्थर तरुण के शरीर पर मार डाला उसके उपरांत आरोपी मौके से फरार हो गए। वरुण के परिजनों को झगड़े का पता चला तो वह मौके पर पहुंचे और वरुण को नजदीकी के अस्पताल में भर्ती किया, जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। वारदात की सूचना मिलते ही उत्तम नगर थाना पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के बाद परिजनों को सौंप दिया। तरुण की मौत की खबर आते ही इलाके में तनाव

फैल गया।

मौत की खबर जैसे ही पता चली तो उसके दोस्त, परिचित और इलाके में रहने वाले अन्य लोग बुरी तरह भड़क गए और उन्होंने आरोपियों के घर के बाहर तोड़फोड़ शुरू कर दी। इसी दौरान 6 मार्च शुक्रवार को भारी पुलिस बल की तैनाती के बीच कुछ लोगों ने एक कार और एक मोटरसाइकिल को आग लगा दी। जिसके बाद दमकल की गाड़ियों को तुरंत मौके पर भेजा गया, जिन्होंने आग पर तुरंत काबू पा लिया। इसी बीच कुछ प्रदर्शनकारियों ने कथित तौर पर आरोपी परिवार के घर पर हमला करने की कोशिश की, जिसके बाद पुलिस कर्मियों ने हस्तक्षेप करते हुए स्थिति और बिगड़ने से पहले भीड़ को तितर-बितर कर दिया। इस बीच तरुण की माँ न्याय की मांग कर रहीं हैं और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ के न्याय तरीके का मांग कर रहीं हैं, परिवार की एक महिला ने न्याय की मांग करते हुए कहा कि घटना के सभी आरोपियों को कड़ी से कड़ी सजा देने की मांग की। वहीं परिवार के कुछ सदस्यों ने आरोपियों की जल्द गिरफ्तारी नहीं होने पर सड़कों को जाम करने की चेतावनी भी दे दी। तरुण खटीक के परिवार को तब और न्याय मिलने की आशा बन गई जब मामले में हिंदूवादी संगठन के सदस्यों की सहयोग मिल गया, कुछ और हिंदू संगठन के सदस्य भी थाने पहुंचे और विरोध प्रदर्शन में शामिल हो गए, नारे लगाए और घटना में शामिल सभी लोगों की तत्काल गिरफ्तारी की मांग किया है। कुछ अपराधियों के घर के कुछ हिस्से तोड़ा भी जा रहा है, मिलाजुला कर वरुण खटीक की मौत की चर्चा बनीं हुई हैं।●

केजरीवाल बंगले के रेनोवेशन पर सीएजी की रिपोर्ट पर तीखी बहस

● संजय कुमार सिन्हा

दिल्ली सरकार के मंत्री प्रवेश साहिब सिंह वर्मा ने दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी के प्रमुख अरविंद केजरीवाल पर तीखा हमला बोलते हुए उन्हें फिल्म धुरंधर के 'रहमान डकैत' जैसा बताया और आरोप लगाया कि उन्होंने अपने सरकारी आवास पर जनता के पैसे की लूट की। दिल्ली में विधानसभा की कार्यवाही के दौरान हुई गरमागरम बहस में वर्मा ने फिल्म 'धुरंधर' के एक किरदार का जिक्र करते हुए बयान दिया। इसके बाद भाजपा और आम आदमी पार्टी के विधायकों ने एक-दूसरे पर तीखे बयान दिए। दरअसल, विधानसभा में बहस तत्काली मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल बंगले के रेनोवेशन पर सीएजी की रिपोर्ट को लेकर हो रही थी। वर्मा ने कहा कि केजरीवाल रहमान डकैत की तरह थे, जिन्होंने जनता के धन को लूटा, और यह भी जोड़ा कि 2025 के विधानसभा चुनाव में जनता ने ऐसे नेतृत्व को नकार दिया। यह मुद्दा 2025 के दिल्ली विधानसभा चुनाव में बड़ा राजनीतिक विवाद बना था, जहां भाजपा ने 'शीश महल' मुद्दे को लेकर 'आप' पर लगातार निशाना साधा।

बताते चले कि यह पूरा विवाद उस सरकारी बंगले को लेकर है, जिसे भाजपा 'शीश महल' कहती रही है। सीएजी रिपोर्ट में सामने आया कि रेनोवेशन की लागत शुरुआती 8 करोड़ से बढ़कर 33.66 करोड़ रुपए तक पहुंच गई, जिससे वित्तीय अनियमितताओं पर सवाल उठे हैं। वही दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने आरोप लगाया कि जब दिल्ली की जनता कोविड-19 जैसी मुश्किलों से जूझ रही थी, तब तत्कालीन मुख्यमंत्री अपने लिए 'महल' बनवाने में लगे थे। उन्होंने कहा कि दिल्ली में एक ही महल है-शीश महल, बाकी लोग धर्मशालाओं में रहते हैं। गुप्ता ने यह भी आरोप लगाया कि एक ही काम के लिए कई कंसल्टेंट्स को नियुक्त किया गया

और बिना उचित टेंडर प्रक्रिया के करोड़ों रुपये खर्च किए गए। उन्होंने मामले को विधानसभा की पब्लिक अकाउंट्स कमेटी को भेजने की सिफारिश की। ज्ञात हो कि बहस के दौरान वर्मा ने बंगले में लगाए गए कई लग्जरी सामानों की सूची पढ़ी, जिनमें महंगे फर्नीचर, इंपोर्टेड फिटिंग्स, झूमर, डिजाइनर इंटीरियर्स, जिम उपकरण, कई टीवी, मिनी बार और बारबेक्यू यूनिट शामिल बताए गए। उन्होंने इसे गंभीर अनियमितता करार दिया। हालांकि आम आदमी पार्टी ने इन आरोपों पर कड़ी प्रतिक्रिया दी। दिल्ली 'आप' प्रमुख सौरभ भारद्वाज ने बीजेपी पर चुनिंदा मुद्दों को उठाने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि केजरीवाल के सरकारी आवास की सारी जानकारी सार्वजनिक है, लेकिन प्रधानमंत्री के आवास की जानकारी गोपनीय रखी जाती है। उन्होंने यह भी कहा कि पार्टी निष्पक्ष बहस के लिए तैयार है। भारद्वाज ने भाजपा सरकार द्वारा 6 करोड़ रुपए से अधिक की वीवीआईपी नाव खरीदने का मुद्दा उठाते हुए कहा कि ऐसे में 30 करोड़ के रेनोवेशन पर सवाल उठाना उचित नहीं है।

MP Shocker : Woman Tehsildar Who Won Rs.50 Lakh on KBC, Arrested in Rs.2.5 Crore Relief Scam

A woman tehsildar who had gained national recognition after winning Rs.50 lakh on Kaun Banega Crorepati has been arrested for her alleged involvement in a Rs.2.5 crore flood relief scam in Madhya Pradesh, officials said. The accused, Amita Singh Tomar, was arrested on Thursday in connection with alleged irregularities in the 2021 flood relief distribution in Baroda tehsil. After being produced in court, she was sent to jail in neighbouring Shivpuri.

According to officials, a police team led by Sub Divisional Officer of Police Avneet Sharma apprehended Tomar from her residence in the Chandravadni Naka area of Gwalior. She was serving as tehsildar of Vijaypur but was removed from her post by Collector Arpit Verma a day before her arrest. Tomar had earlier approached both the High Court and the Supreme Court seeking anticipatory bail, but her pleas were rejected.

The case involves the alleged diversion of around Rs.2.5 crore in flood relief funds into fake bank accounts for embezzlement. So far, 22 patwaris and one tehsildar have been arrested in connection with the scam, while around 110 individuals have been named in the FIR. Superintendent of Police Sudhir Kumar Agarwal said that Tomar had been absent from duty, following which police tracked her down and arrested her. The case is being investigated by the SDOP of Baroda tehsil in Sheopur district. Tomar had previously come into the national spotlight after winning Rs.50 lakh on the popular quiz show Kaun Banega Crorepati, hosted by Amitabh Bachchan.

नितिन नवीन की टीम में बढ़ सकता है मध्य प्रदेश का कद

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन

बी.एल. संतोष शिव प्रकाश हितानंद शर्मा

भाजपा संगठन में बडे पैमाने पर नियुक्ति होने की संभावना

कैलाश विजयवर्गीय बी.डी. शर्मा नरोत्तम मिश्रा लाल सिंह आर्य

नितिन नवीन को भाजपा का राष्ट्रीय अध्यक्ष बने हुए दो महीने (20 जनवरी को पद संभाला) से अधिक का वक्त बीत चुका है, लेकिन अब तक वह अपनी टीम यानि राष्ट्रीय कार्यकारिणी का गठन नहीं कर पाए है। अब जब संसद का बजट सत्र खत्म होने जा रहा है तब पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के गठन की अटकलें तेज हो गई है। बिहार से आने वाले पार्टी के नए राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन की टीम में क्या मध्यप्रदेश का कद बढ़ने जा रहा है, यह सवाल भी इन दिनों सियासी गलियारों में खूब चर्चा के केंद्र में है। 45 साल के नितिन नवीन की नई टीम में नए के साथ अनुभवी चेहरों को जगह मिल सकती है। ऐसे में मध्यप्रदेश से आने वाले दिग्गज नेताओं की नई भूमिका को लेकर भी अटकलों का बाजार गर्म है। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन की नई राष्ट्रीय टीम में मध्य प्रदेश के कई कद्दावर और युवा नेताओं को जगह मिलने की प्रबल संभावना है। सबसे अधिक चर्चा मध्यप्रदेश भाजपा के पूर्व अध्यक्ष और खजुराहों सांसद वी.डी. शर्मा को लेकर है। वी.डी. शर्मा का पार्टी संगठन में राष्ट्रीय महासचिव बनने की काफी संभावना है। उनके नेतृत्व में मध्य प्रदेश में भाजपा ने विधानसभा और लोकसभा चुनावों में ऐतिहासिक सफलता हासिल की है। मध्यप्रदेश में 65 हजार से बूथों को जिस तरह से वीडी शर्मा के नेतृत्व में डिजिटाइलजेशन किया गया था और उसका असर सीधे चुनावी परिणाम में देखा गया था, ऐसे में संगठन के मध्य प्रदेश मॉडल को राष्ट्रीय स्तर पर लागू करने के लिए केंद्रीय नेतृत्व उन्हें बड़ी जिम्मेदारी देने पर विचार कर रहा है। खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह वी.डी. शर्मा की संगठन को मजबूत बनाने के लिए कई मंचों पर तारीफ कर चुके हैं। वहीं इन दिनों जो दूसरा नाम सबसे अधिक चर्चा में है वह मोहन सरकार के मंत्री कैलाश विजयवर्गीय का है। बताया जा रहा है कि बीते कुछ वक्त से कैलाश विजयवर्गीय प्रदेश की राजनीति में अपने को असहज महसूस कर रहे हैं और सरकार में मंत्री होने के बावजूद कई मौकों पर उनकी, अपनी ही सरकार के खिलाफ नाराजगी खुलकर सामने आ चुकी है। वहीं बीते कुछ समय से कैलाश विजयवर्गीय दिल्ली में ज्यादा सक्रिय दिखाई दे रहे है। ऐसे में कैलाश विजयवर्गीय को संगठन में कोई बड़ी राष्ट्रीय भूमिका दी जा सकती है। कैबिनेट की बैठकों से दूरी बनाने और विभागीय कामकाज में ज्यादा रूचि नहीं लेने की खबरों ने कैलाश विजयवर्गीय के एक बार दिल्ली में सक्रिय होने की अटकलों को और तेज कर दिया है। वहीं 2023 में विधानसभा चुनाव में अपनी सीट गंवाने वाले दिग्गज नेता नरोत्तम मिश्रा भी लंबे समय से राजनीतिक पुनर्वास की बाट जोह रहे हैं। ऐसे में उनकी संगठन क्षमता और लंबे सियासी अनुभवों को देखते हुए पार्टी का राष्ट्रीय नेतृत्व उन्हे दिल्ली में बड़ी भूमिका सौंप सकता है। वहीं नितिन नवीन की नई टीम से मध्यप्रदेश के मौजूदा दिग्गजों की विदाई हो सकती है। भाजपा अनुसूचित जाति मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष लाल सिंह आर्य की विदाई लगभग तय है। इसी तरह पार्टी के संसदीय बोर्ड में शामिल सत्यनारायण जटिया भी छुट्टी हो सकती है। इनकी जगह मध्य प्रदेश से नए चेहरों को जगह मिल सकती है। अगर देखा जाए तो इस वक्त मध्यप्रदेश में संगठन मंत्री का पद भी खाली है। हितानंद शर्मा की संघ में वापसी के बाद अब तक इस पद कोई नियुक्त नहीं हुई है। ऐसे मे संगठन की दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण माने जाने वाले इस पद पर किसकी नियुक्ति होगी, यह भी देखना दिलचस्प होगा। वहीं राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय संगठन महामंत्री बी.एल. संतोष की भी संघ में वापसी हो सकती है। उनकी जगह सह-संगठन महामंत्री शिवप्रकाश का कद बढ़ाया जा सकता है। वहीं केरल, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, कर्नाटक, गोवा और मणिपुर में भी भाजपा संगठन महामंत्री के पद रिक्त है। ऐसे मे आने वाले समय में भाजपा संगठन में बडे पैमाने पर नियुक्ति होने की संभावना जताई जा रहा है।

ईरान के नाम पर छाती पीटी तो बढ़िया इलाज कर देंगे

ईरान और अमेरिका के युद्ध के बीच हिंदुस्तान में संभल के सीओ के बयान पर भी युद्ध छिड़ गया है। बयान दिया है संभल के सीओ कुलदीप सिंह ने। इतना ही नहीं, उन्होंने नमाज को लेकर भी बयान दिया है। उनका बयान सोशल मीडिया में जमकर वायरल हो रहा है। इसके बाद राजनीतिक पार्टियों के नेताओं ने उनके बयान का विरोध कर आलोचना की है। दरअसल, संभल कोतवाली में आयोजित पीस कमेटी की बैठक में सीओ कुलदीप सिंह ने कहा कि अमेरिका-इजराइल और ईरान के बीच जो युद्ध चल रहा है, इसका असर यहां नहीं दिखना चाहिए। यहां के कुछ लोगों को यदि दिक्कत हो रही है तो उस विमान में बैठकर ईरान चले जाएं जो भारतीय लोगों को लेने के लिए जा रहा है। ईरान जाकर लड़ाई लड़ें। लेकिन, शहर में कानून व्यवस्था पर इसका असर पड़ा तो फिर हम बढ़िया वाला इलाज करेंगे। उन्होंने कहा कि हम दूसरे की लकडी क्यों उठाएं। अगर दो दूसरे देशों के बीच विवाद है तो वे सुलझाएंगे आपस में। अगर जरूरत पड़ी तो सरकार करेगी अपने स्तर पर। हम क्यों कड़वाहट घोलें, हमारा मीठी सैंवइयां का त्योहार है, हम उसमें कड़वाहट क्यों घोले, क्यों फिजा बिगाड़े। किसी को भी खुराफाती

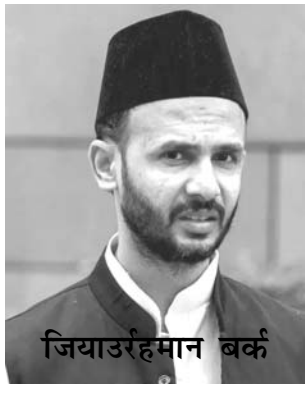
जियाउर्रहमान बर्क

को ऐसा मत करने दीजिए कि हमारे शहर का लॉ एंड ऑर्डर खराब हो। बयान सामने आने के बाद सोशल मीडिया में यह वायरल हो रहा है।

गौरतलब है कि जुमा अलविदा की नमाज को लेकर पीस कमेटी की बैठक हुई थी। इसमें सिटी मजिस्ट्रेट सुधीर कुमार और सीओ कुलदीप सिंह मौजूद थे। इसी दौरान उन्होंने यह बयान दिया था। सीओ कुलदीप सिंह ने कहा कि जुमा अलविदा की नमाज सड़कों

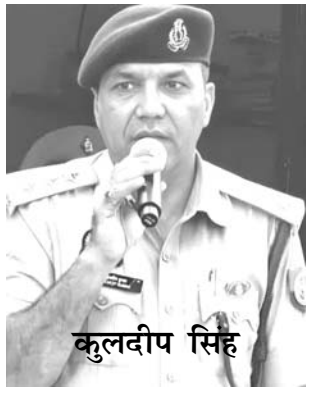
कुलदीप सिंह

पर नहीं पढ़ी जाएगी। शासनादेश है, इसका सभी को पालन करना होगा। यदि किसी ने उल्लंघन किया तो मुकदमा दर्ज कर जेल भेजने की कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने लोगों से अपील की है कि शांति के साथ मिल-जुलकर भाईचारे के साथ त्योहार मनाएं। सीओ सिंह ने कहा कि किसी भी देश के विरोध में कोई पट्टी, स्लोगन न दिखे और न ही नारा लगना चाहिए। हम हिंदुस्तानी हैं और सुकून से रह रहे हैं। जहां विवाद चल रहा है, वहां के देश जानें। कुछ लोग सोशल मीडिया पर तरह-तरह की रील्स बनाकर वायरल कर रहे हैं। पुलिस की एक टीम निगरानी कर रही है। आपत्तिजनक वीडियो वायरल की गई तो सख्ती से निपटा जाएगा। शहर में अमन शांति से जुमा अलविदा की नमाज अदा हो जाएं। इसके लिए पूरी तैयारी है। अमेरिका-इस्राइल और ईरान के बीच चल रहे युद्ध के चलते लोग शहर में कानून व्यवस्था न बिगाड़ें, इसके लिए चेतावनी दी गई है। सभी को सौहार्दपूर्ण माहौल बनाने में सहयोग करना चाहिए। यहां के कुछ लोगों को यदि दिक्कत हो रही है तो उस विमान में बैठकर ईरान चले जाएं जो भारतीय लोगों को लेने के लिए जा रहा है। ईरान जाकर लड़ाई लड़ें। लेकिन, शहर में कानून व्यवस्था पर इसका असर पड़ा तो फिर हम बढ़िया वाला इलाज करेंगे। इसी मीटिंग में सीओ कुलदीप ने यह भी कहा कि जो रील बनाने के चक्कर में होगा उसकी हम रेल बना देंगे। हम सब त्योहार मनाने में आपके साथ हैं, लेकिन कोई एक आदमी सभी व्यवस्थाओं को आकर पलीता लगा दे ये हमें बर्दाश्त नहीं है।

बहरहाल, संभल के सपा सांसद जियाउर्रहमान बर्क ने इसे लेकर टिप्पणी की है। उन्होंने कहा कि ईरान के नाम पर छाती पीटी तो बढ़िया इलाज कर देंगे... क्या अब पुलिस-प्रशासन की भाषा यही रह गई है। किसी अधिकारी को धर्म या समुदाय का अपमान करने का अधिकार किसने दिया। पुलिस का काम नागरिकों की सुरक्षा करना है, न कि धमकी देकर डर का माहौल पैदा करना। सांसद बर्क ने यह बात अपने सोशल मीडिया प्लेटफार्म फेसबुक पर लिखी है।

बीजेपी से नाराज ब्राह्मणों पर सभी दलों का दांव

● संजय सक्सेना

उत्तर प्रदेश की राजनीति में बीस साल लंबा वक्त होता है. इतने समय में चेहरे बदलते हैं, नारे बदलते हैं, गठबंधन टूटते-बनते हैं, लेकिन कुछ बुनियादी सच जस के तस रहते हैं. जाति, सामाजिक संतुलन और सत्ता तक पहुंचने की जद्दोजहद. साल 2007 में जिस सोशल इंजीनियरिंग ने सत्ता का ताला खोला था, करीब दो दशक बाद वही प्रयोग बदले पैकेज में फिर लौटता दिख रहा है. फर्क बस इतना है कि अब हालात ज्यादा जटिल हैं, मतदाता ज्यादा सजग हैं और सियासी खिलाड़ी एक-दूसरे की चाल पहले से बेहतर समझते हैं.2027 के विधानसभा चुनाव को अभी वक्त है, लेकिन मैदान अभी से सज चुका है. हर दल अपने-अपने स्तर पर उस वोट बैंक की तलाश में है, जो सत्ता की सीढ़ी का आखिरी पायदान बन सकता है. इस पूरी कवायद के केंद्र में एक बार फिर ब्राह्मण वोटर आ खड़ा हुआ है. उत्तर प्रदेश की आबादी में करीब बारह फीसदी हिस्सेदारी रखने वाला यह वर्ग लंबे समय से किसी एक पार्टी का स्थायी वोट बैंक नहीं रहा. कभी सत्ता के साथ, कभी असंतोष में, कभी खामोशी से और कभी मुखर होकर इस वर्ग ने सियासत की दिशा बदली है.

करीब उन्नीस साल पहले बहुजन राजनीति की अगुआ मायावती ने दलित-ब्राह्मण गठजोड़ का जो प्रयोग किया था, उसने यह साबित कर दिया था कि अगर सामाजिक समीकरण सधे हों तो सियासी गणित ध्वस्त भी हो सकता है. 2007 की जीत उसी प्रयोग की देन थी. लेकिन समय के साथ वही फार्मूला कमजोर पड़ता गया. दलित-मुस्लिम समीकरण आजमाया गया, फिर दोबारा ब्राह्मणों की ओर हाथ बढ़ाया गया, लेकिन बीएसपी का जनाधार सिमटता चला गया. 2022 में पार्टी एक सीट पर आ गई. यह गिरावट खुद बताती है कि सिर्फ नारे और प्रतीक काफी नहीं होते, जमीन पर भरोसा भी चाहिए.इसी बदले हुए माहौल में सोशल इंजीनियरिंग 2.0 की चर्चा शुरू हुई है. इस बार प्रयोग सिर्फ एक दल नहीं कर रहा. समाजवादी पार्टी, बीएसपी, बीजेपी और उनके सहयोगी सभी अपने-अपने तरीके से ब्राह्मण वोटर की नब्ज टटोल रहे हैं. फर्क यही है कि अब दलित वोटर को केंद्र में रखने के बजाय कई जगह ओबीसी वोटर को मुख्य धुरी बनाया जा रहा है और ब्राह्मण को

उसके साथ जोड़ने की कोशिश हो रही है. इस पूरी सियासत में सबसे दिलचस्प और आक्रामक एंट्री हुई है सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी की. पार्टी के मुखिया ओम प्रकाश राजभर ने आजमगढ़ से जो संदेश दिया है, वह सिर्फ एक रैली भर नहीं है. आजमगढ़ वही इलाका है, जिसे समाजवादी पार्टी का अभेद किला माना जाता रहा है. यहां से मुलायम सिंह यादव और अखिलेश यादव सांसद रह चुके हैं. आज भी जिले की सभी विधानसभा सीटों पर समाजवादी पार्टी का कब्जा है. ऐसे इलाके में ब्राह्मणों की बड़ी रैली करना सीधे तौर पर सपा के सामाजिक आधार को चुनौती देना है. राजभर की रैली में ब्राह्मण समाज के सम्मान की बात हुई, परशुराम और सुहेलदेव के नारे लगे, यूजीसी के नए नियमों से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक के मुद्दे उठे. संदेश साफ था कि यह सिर्फ भावनात्मक अपील नहीं, बल्कि पढ़े-लिखे, नौकरीपेशा और प्रभावशाली ब्राह्मण वर्ग को भरोसा देने की कोशिश है. मंच से यह भी जताया गया कि न्याय और सम्मान की लड़ाई में सरकार और अदालत दोनों दरवाजे खुले हैं. यह भाषा सीधे उस वर्ग से संवाद करती है, जो खुद को दिशा देने वाला मानता है.

इस रणनीति का एक और पहलू है. राजभर का निशाना बार-बार समाजवादी पार्टी पर रहा. संदेश यह कि आजमगढ़ में जो भीड़ जुटी है, वह सिर्फ समर्थन देने नहीं, बल्कि सपा के दबदबे को तोड़ने आई है. यह दावा जितना राजनीतिक है, उतना ही मनोवैज्ञानिक भी. चुनाव से पहले अगर किसी क्षेत्र में यह धारणा बन जाए कि मुकाबला अब एकतरफा नहीं रहा, तो वोटर का व्यवहार बदलने लगता है. उधर, समाजवादी पार्टी भी हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठी. पीडीए यानी पिछड़ा, दलित और अल्पसंख्यक का जो फॉर्मूला लोकसभा चुनाव 2024 में असरदार साबित हुआ, उसी को आगे बढ़ाने की तैयारी है. लेकिन साथ ही ब्राह्मणों के बीच संदेश देने की कोशिशें भी दिख रही हैं. विधानसभा में नेता विपक्ष के तौर पर माता प्रसाद पांडेय की नियुक्ति, पूर्वांचल के प्रभावशाली ब्राह्मण परिवारों से मुलाकातें और सोशल मीडिया के जरिए दिए जा रहे संकेत इसी दिशा में पढ़े जा रहे हैं. बीजेपी के लिए स्थिति और भी नाजुक है. सत्ता में होने के फायदे हैं, लेकिन एंटी-इनकंबेंसी का दबाव भी. पार्टी के भीतर ब्राह्मण बनाम ठाकुर की चर्चाएं सामने आ चुकी हैं. कुछ ब्राह्मण विधायकों की बैठक और उस पर नेतृत्व की नाराजगी ने साफ कर दिया कि अंदरखाने खींचतान है. बरेली से लेकर प्रयागराज तक सामने आए विवादों ने इस असंतोष को और हवा दी. यही वजह है कि उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक जैसे चेहरे प्रतीकात्मक कदमों के जरिए ब्राह्मण समाज को साधने की कोशिश करते नजर आए. कांग्रेस इस पूरी बहस में अपेक्षाकृत खामोश है. एक तरफ राहुल गांधी की ओबीसी राजनीति, दूसरी तरफ समाजवादी पार्टी के साथ गठबंधन की मजबूरी. कभी उत्तर प्रदेश में ब्राह्मणों की पहली पसंद रही कांग्रेस अब असमंजस में दिखती है. क्या वह दोबारा उस वर्ग की ओर खुले मन से लौट पाएगी, या मौजूदा लाइन पर ही चलेगी, यह वक्त बताएगा.

असल सवाल यह है कि क्या ब्राह्मण वोट बैंक आज भी किसी सोशल इंजीनियरिंग का निर्णायक आधार बन सकता है. आंकड़े बताते हैं कि सवर्ण आबादी करीब बीस फीसदी है, जिसमें ब्राह्मण सबसे बड़ा हिस्सा हैं. लेकिन यह वोट हमेशा जाति के आधार पर एकजुट नहीं होता. उम्मीदवार, क्षेत्रीय समीकरण, स्थानीय मुद्दे और सत्ता का माहौल सब मिलकर फैसला तय करते हैं. यही कारण है कि ब्राह्मण राजनीति जोखिम भरी भी है और जरूरी भी. 2027 की ओर बढ़ते उत्तर प्रदेश में सियासत अब सिर्फ नारों की नहीं, बल्कि धैर्य, संगठन और भरोसे की परीक्षा बनती जा रही है. सोशल इंजीनियरिंग 2.0 का शोर तेज है, लेकिन उसका नतीजा इस बात पर निर्भर करेगा कि कौन सा दल प्रतीकों से आगे जाकर जमीनी हकीकत को साध पाता है. ब्राह्मण वोटर इस बार भी निर्णायक हो सकता है, लेकिन किसके पक्ष में, यह अभी पूरी तरह खुला सवाल है.

आजम का समय खराब तो ...

अखिलेश का नये चेहरे पर दांव

● संजय सक्सेना

उत्तर प्रदेश की सियासत में मुस्लिम मतदाता सदैव निर्णायक भूमिका निभाते रहे हैं। करीब 125 सीटों पर इनका असर सीधे नतीजों को प्रभावित करता है, खासकर पश्चिमी इलाके में जहां मुस्लिम आबादी चालीस फीसद तक पहुंच जाती है। भाजपा को छोड़ अन्य सभी दल इन मतों को हथियाने के लिए होड़ लगाए रहते हैं, और समाजवादी पार्टी के नेता अखिलेश यादव इस दौड़ में सबसे आगे दिखते हैं। जेल में बंद आजम खान से लेकर बसपा और कांग्रेस छोड़ हाल ही में पार्टी में आए नसीमुद्दीन सिद्दीकी तक पर वे दांव लगा रहे हैं, ताकि यूपी में मुस्लिम वोटों के एक और सौदागर ओवैसी की बढ़ती चुनौती का मुकाबला हो सके। आज हालात यह है कि जेल में बंद आजम खान की कमी सपा के लिए गहरी चोट साबित हो रही है, क्योंकि रामपुर से सहारनपुर तक पश्चिमी उत्तर प्रदेश की उन 60 से अधिक सीटों पर उनका जादू बरकरार है जहां मुस्लिम मतदाता जीत हार तय करते हैं। जेल की चारदीवारी में बंद होते हुए भी उनके समर्थक बाहर चिल्ला रहे हैं, पश्चिमी इलाके के छह जिलों में मुस्लिम आबादी पैंतालीस फीसद से ऊपर होने के कारण वहां सपा का वोट बैंक डगमगाने लगा है। नसीमुद्दीन सिद्दीकी इस कमी को कितना भर पाएंगे, यह सवाल खड़ा हो गया है, क्योंकि बसपा से होते हुए कांग्रेस तक अपनी यात्रा में उन्होंने बुंदेलखंड के दर्जन भर जिलों में मुस्लिम मतों को संगठित करने का लोहा मनवा लिया है। हाल ही में 15 फरवरी को सपा में शामिल होने के बाद वे बुंदेलखंड की उन पचास सीटों पर फोकस कर रहे हैं जहां मुस्लिम आबादी तीस फीसद के आसपास है, और पूर्व में बसपा के प्रमुख मुस्लिम नेता के रूप में उन्होंने वहां 17 विधायकों को जुटाया था।

नसीमुद्दीन की ताकत उनकी रणनीतिक चतुराई में है, जो आजम की जमीनी पकड़ से अलग लेकिन पूरक साबित हो सकती है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में आजम के खालीपन को वे पूरी तरह न भर सकें, क्योंकि वहां सहारनपुर से मुरादाबाद तक की 21 मुस्लिम बहुल सीटों पर आजम का नाम ही वोट जुटाता रहा है। लेकिन बुंदेलखंड में उनकी पैठ गहरी है, जहां झांसी, बांदा, चित्रकूट जैसे जिलों की 18 सीटों पर मुस्लिम मतदाता निर्णायक हैं और नसीमुद्दीन ने बसपा काल में इनमें से आधे पर असर डाला था। सपा को कुल मिलाकर 150 सीटों पर फायदा हो सकता है, क्योंकि नसीमुद्दीन पूर्वांचल से बुंदेलखंड तक 100 से अधिक सीटों पर मुस्लिम युवाओं को लुभाने का दावा कर रहे हैं। ओवैसी

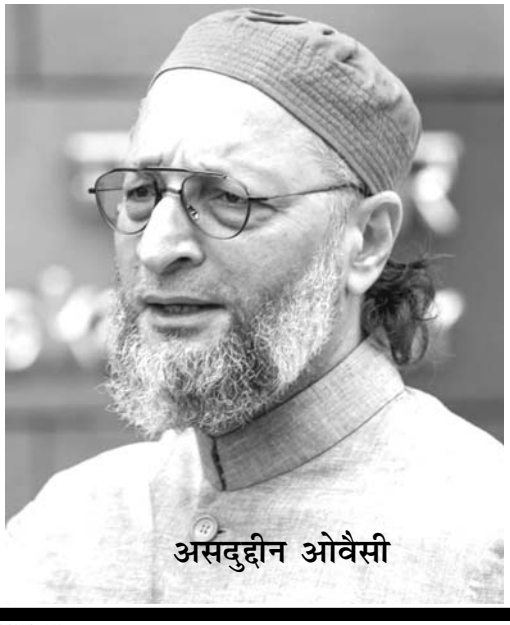

असदुद्दीन ओवैसी

इमरान मसूद

आशु मलिक

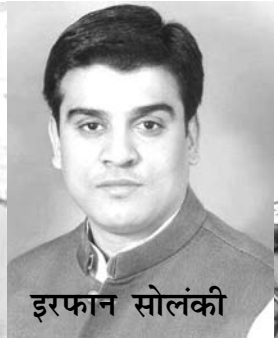
इरफान सोलंकी

नईम उल हसन

नफीस अहमद

की पार्टी हर ग्राम पंचायत में 61 सदस्यीय समितियां गढ़ रही है, जो पश्चिमी इलाके की पचास सीटों पर सेंध लगा सकती है, लेकिन नसीमुद्दीन का अनुभव इस खतरे को कम कर सकता है। सपा के अन्य मुस्लिम नेताओं द्वारा नसीमुद्दीन को स्वीकारना आसान नहीं होगा, क्योंकि पार्टी में पहले से इमरान मसूद जैसे सहारनपुर के दिग्गज हैं जिन्होंने पश्चिमी इलाके में दर्जन भर सीटों पर असर जमाया है। आशु मलिक जैसे नेता भी जिले के निकाय चुनावों में इमरान से टकरा चुके हैं, और सिसामऊ से इरफान सोलंकी तक सपा के 36 मुस्लिम विधायकों में आंतरिक खींचतान पुरानी है। नसीमुद्दीन को बुंदेलखंड संभालने का मौका मिला तो इमरान सहारनपुर की आठ सीटों पर असहज हो सकते हैं, क्योंकि दोनों का वोट बैंक ओवरलैप करता है। लेकिन अखिलेश की चतुराई से यह संतुलन बन सकता है, क्योंकि पिछले चुनावों में सपा ने 51 मुस्लिम बहुल सीटों पर मजबूत प्रदर्शन किया था और नसीमुद्दीन जैसे चेहरे से वह संख्या सत्तर तक पहुंच सकती है।

आजम की कमी का असर पश्चिमी उत्तर प्रदेश के उन 26 जिलों में सबसे ज्यादा दिखेगा जहां मुस्लिम आबादी 26 फीसद है और सपा को वहां 57 सीटें गंवाने का डर सता रहा है। नसीमुद्दीन इसकी भरपाई बुंदेलखंड से कर सकते हैं, जहां उन्होंने बसपा में 18 नेताओं को संगठित किया था और अब सपा के 17 पूर्व विधायकों के साथ मिलकर 40 सीटों पर दबदबा बना सकते हैं। ओवैसी का भूत सपा के सिर सवार है, क्योंकि उनकी पार्टी पंचायत स्तर पर बूथ मजबूत कर रही है और मुस्लिम युवाओं को छीनने की कोशिश में जुटी है, लेकिन नसीमुद्दीन का आना सपा को सांस लेने का मौका देगा। शिवपाल सिंह यादव की जेल मुलाकातें आजम

का आशीर्वाद दिला सकती हैं और अगर आजम ने हामी भरी तो नसीमुद्दीन को आगे बढ़ाया जाएगा। सपा की भाषा शैली अब बदल रही है, क्योंकि नसीमुद्दीन जैसे नेता मुस्लिम वोटों को जोड़ने के साथ जाट और पिछड़े समीकरण भी साधेंगे। उत्तर प्रदेश की कुल मुस्लिम आबादी पांच करोड़ के करीब पहुंच चुकी है, जो 125 सीटों पर फैली हुई है। आजम के बिना पश्चिमी इलाके की उन 33 सीटों पर खतरा बढ़ गया जहां मुस्लिम तीस फीसद से ज्यादा हैं, लेकिन नसीमुद्दीन बुंदेलखंड की उन 27 सीटों से भरपाई करेंगे जहां उनका पुराना नेटवर्क काम आएगा। पार्टी के अन्य मुस्लिम चेहरों जैसे नईम उल हसन या नफीस अहमद स्वीकार करेंगे या नहीं, यह आंतरिक कलह पर निर्भर है, लेकिन इमरान मसूद की असहजता पहले ही सतह पर आ चुकी है।

कुल मिलाकर नसीमुद्दीन, आजम की कमी का आधा भर सकते हैं, क्योंकि पश्चिमी यूपी में आजम का जादू अनोखा है जो 21 जिलों की 101 सीटों पर फैला है, जबकि नसीमुद्दीन बुंदेलखंड और पूर्वांचल की 100 सीटों पर मजबूत हैं। सपा के मुस्लिम नेताओं में कलह बरकरार रहेगी, क्योंकि सिकंदरपुर के जियाउर रिजवी से गोपालपुर के नफीस तक कई दावेदार हैं, लेकिन अखिलेश की रणनीति से संतुलन बनेगा। ओवैसी की आक्रामकता पश्चिमी इलाके में सेंध लगाएगी, लेकिन नसीमुद्दीन का सहारा सपा को मजबूत कर सकता है। योगी सरकार तुष्टीकरण पर हमला बोलेगी, पर अगर आजम का समर्थन मिला तो सपा बेदम नहीं पड़ेगी। इस जोड़ी की सफलता से सपा की कमर सीधी हो सकती है, वरना ओवैसी का डर हकीकत बन जाएगा।●

नसीमुद्दीन सिद्दीकी एवं अखिलेश यादव

India Cuts Petrol Excise Duty to Rs 3/Litre, Diesel Exempted Amid Rising Crude Prices

The Indian government has cut special additional duties for petrol and diesel in a respite for oil marketing companies who are struggling with a global oil disruption triggered by the US-Israel war with Iran. In a government order on Thursday, the center-imposed excise duty for petrol was brought down to 3 rupees (•0.028, $0.032) per liter from 13 rupees earlier while the duty on diesel was eliminated entirely, down from 10 rupees.

The Iran war and Tehran's consequent chokehold on the crucial Strait of Hormuz has upended oil and gas export, sending global crude oil prices soaring. India has also seen the impact of the volatility in crude prices and oil and gas disruptions. India is the world's third-biggest oil importer and ?consumer and as per official estimates some 40% of India's energy needs depend on supplies passing through Hormuz.

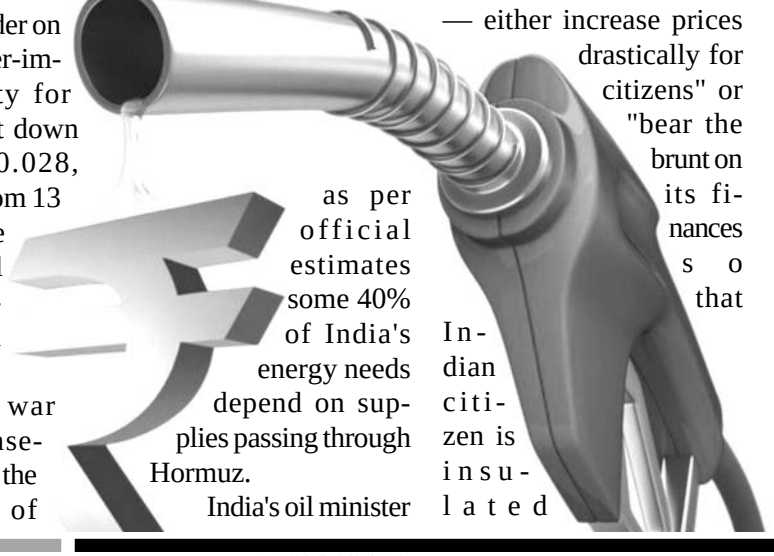

India's oil minister said in a statement on Friday that the Indian government, headed by Prime Minister Narendra Modi, chose to shield its citizens from the steep increase in global crude prices by taking a loss on its own finances. "The Modi Government had two choices — either increase prices drastically for citizens" or "bear the brunt on its finances so that Indian citizen is insulated from international volatility," Minister for Petroleum and Natural Gas Hardeep Singh Puri said on X.

Puri said that the government has taken a "huge hit"on its taxation revenues to ensure that the very high losses of oil companies are reduced. The reduction in excise duties has left Indians wondering whether fuel prices at petrol stations will get cheaper. Indian news outlets NDTV and India Today cited industry experts as saying that consumers may not see a cut in fuel retail prices immediately as the reductions will largely be absorbed by oil marketing companies, who have been selling petrol and diesel at a loss.

इंदौर के ब्रजेश्वरी एनेक्स में स्थित पुगलिया परिवार के घर में हुए इलेक्ट्रिक कार हादसे में 8 लोगों की बेहद दर्दनाक मौत हो गई। इस हादसे में मनोज पुगलिया परिवार की गर्भवती बहू सिमरन समेत 3 बच्चों की भी मौत हुई है। मृतकों में 3 बच्चे, तीन महिलाएं और 2 पुरुष शामिल हैं। वहीं 4 लोग गंभीर रूप से घायल हुए हैं। लोगों ने मदद की नाकाम कोशिशें की। क्योंकि घर आग की भट्टी बन चुका था। इस पर डिजिटल लॉक जाली से कवर की गई बालकनी में मदद नहीं पहुंच सकी। अभी तक की पुलिस की जांच में जो सामने आया उसमें घर के नीचे चार्जिंग पर लगी इलेक्ट्रिक कार (टाटा पंच) में शॉर्ट सर्किट से आग लगना वजह बनी है। घटना बुधवार सुबह 4 बजे की है। कार के ठीक पास में इलेक्ट्रिक पोल था, जिसकी वजह से आग वायरिंग से होकर दूसरी और तीसरी मंजिल तक आग ने पूरे घर को चपेट में ले लिया। आग इतनी तेजी से पसरी कि पूरा घर जलती हुई भट्टी बन गया। घटना के बाद घर में से 6-7 एलपीजी सिलेंडर भी बरामद किए गए हैं। इनमें एक एक या दो सिलेंडर के फटने की भी आशंका है। मौके पर मौजूद सीएसपी अमरेंद्र सिंह ने बताया कि 8 मौतें हुई हैं। प्राथमिक जांच में इवी कार से आग लगने का कारण सामने आया है। मृतकों में महिलाएं, बच्च्चे और पुगलिया परिवार के रिश्तेदार भी शामिल हैं। पुलिस ने जांच शुरू की है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट और जांच के बाद पूरी डिटेल सामने आ सकेगी।

☞ **छोटी बहू अभी मायके में हैं तो बच गई :** पड़ोसी ने बताया कि आग लगने के बाद घर से चार लोग तुरंत बाहर निकल गए। वहीं, अन्य लोग फंस गए। घर के अंदर जो लोग फंसे थे, उनमें तीन बच्चे थे। आठों की मौत हो गई है। हमलोगों ने खिड़की के शीशे तोड़े लेकिन उन सबों को बचा नहीं पाए। फायर ब्रिगेड ने भी कोशिश की। उन्होंने कहा कि 23 जनवरी को बेटे की शादी हुई थी। छोटी बहू अभी मायके गई हुई थी। मनोज जैन पुगलिया के साले आए हुए थे। उनकी भी मौत हो गई है।

☞ **बंगले में अति सुरक्षा बना मौत की वजह :** घटना के बाद पुगलिया परिवार के घर की जो हालत नजर आई वो भयावह थी। कौने पर स्थित तीन मंजिला इस मकान में मुख्य द्वार पर लोहे का एक हैवी गेट है। दूसरी मंजिल पर बालकनी को चारों तरफ से सुरक्षा के लिहाज जाली से पैक किया था। इस जाली की वजह से फायर ब्रिगेड का पानी घर में उस फोर्स से नहीं जा सका। अगर पानी अंदर तक जाता तो हो सकता है कि कुछ लोगों को बचाया जा सकता था।

☞ **डिजिटल लॉक से नहीं निकल पाए बाहर :** इसके अलावा घर में डिजिटल लॉक भी थे। इसी वजह से जब आग लगी तो घर में सो रहे सदस्य बाहर नहीं निकल पाए। हालांकि पोस्टमार्टम के बाद पता चल सकेगा कि सभी 8 लोगों में से कितने लोगों की जलने और कितनों की दम घुटने से मौत हुई। हालांकि रेस्क्यू ऑपरेशन टीम को घर में घुसने के लिए आसपास लगी जाली को काटना पड़ा। इस हिसाब से आशंका है कि ज्यादातर लोगों की मौत झुलसने की वजह से हुई होगी।

☞ **कार-एसी कंप्रेशर और फ्रीज फटने की आवाजें :** ब्रजेश्वरी एनेक्स के इस घर के आसपास रहने वाले पड़ोंसियों ने बताया कि सुबह 4 से सवा 4 के आसपास शॉर्ट सर्किट की आवजों के साथ कुछ दूसरे विस्फोट की आवाजें भी सुनाई दी। इनमें कार की बैटरी, एसी के कंप्रेशर और फ्रीज फटने की आवाजें हैं। घर में 7-8 सिलेंडर भी रखे थे, हालांकि एक या दो ही सिलेंडर फटे हैं, बाकी सब खाली थे। बता दें कि मनोज पुगलिया रबर कारोबारी थे। अनुमान है कि घर में रबर सबंधी भी कोई मटैरियल रखा हो। घर में पीएनजी गैस कनेक्शन की लाइन भी है, हालांकि लाइन ने आग नहीं पकड़ी, अन्यथा इससे भी बड़ा हादसा होता और आसपास के घरों को भी चपेट में ले सकता था।

☞ **40 मिनट बाद पहुंचा फायर ब्रिगेड :** इस घटना का सबसे दुखद पहलू यह है कि घटना के बाद जब लोगों ने पुलिस और फायर ब्रिगेड को कॉल किया तो फायर ब्रिगेड करीब 40 मिनट देरी से पहुंची। हालांकि तिलक नगर पुलिस 10 मिनट में मौके पर पहुंच गई थी। रहवासियों ने बताया कि उसमें भी पहला टैंकर खाली होने के बाद दूसरा टैंकर मंगाया गया। इसमें भी समय लग गया।

☞ **बाल्टी से पानी डाला, बच जाती कुछ लोगों की जान :** पड़ोसियों का कहना है कि अगर समय पर फायर ब्रिगेड आ जाती तो कुछ लोगों को बचाया जा सकता था। घटना के बाद करीब आधे घंटे तक पड़ोसी बाल्टियों से पानी डालते रहे, लेकिन आग इतनी भयावह थी कि कुछ नहीं हो सका। घर आग की भट्टी बन चुका था, उसकी लपट की वजह से वहां खडे रहना भी संभव नहीं था। प्रत्यक्षदर्शी लोगों ने बताया कि जैसे ही आग लगी सबसे पहले घर के मालिक मनोज पुगलिया जागे और कमरे से बाहर भागे। इसके बाद वे वापस अंदर गए और किसी को बाहर लाने का प्रयास किया, लेकिन आग इतनी ज्यादा थी कि न तो वे खुद बाहर निकल सके और न ही किसी को बचा सके। तिलक नगर थाना प्रभारी मनीष लोधा ने बताया कि कुल आठ लोगों की मौत हुई है। इनमें 3 बच्चे, 3 महिलाएं और 2 पुरुष हैं। उन्होंने बताया कि 3 लोग घायल हुए हैं। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही पता चल सकेगा कि सभी लोगों की मौत झुलसने से हुई है या दम घुटने से। मृतकों में मनोज पुगलिया के साथ ही विजय सेठिया, छोटू सेठिया, सुमन, सिमरन, राशि सेठिया और टीनू समेत 8 लोगों की मौत हो गई। हादसे में सौरभ पुगलिया, आशीष और हर्षित घायल हुए हैं। इनका अस्पताल में इलाज चल रहा है। मरने वालों में इनके बाहर से आए रिश्तेदार भी हैं।

☞ **क्या कहा स्थानीय पार्षद ने :** यहां के स्थानीय पार्षद राजीव जैन ने बताया कि घर की गैलरी में जाली लगी होने की वजह से पानी पूरी फोर्स के साथ नहीं जा सका। पानी जाली से टकराकर वापस बाहर आ रहा था। पूरा घर पैक था। एक सिलेंडर के फटने की भी आवाज लोगों को आई थी। हालांकि बाकी सिलेंडर सुरक्षित हैं। उन्होंने कहा कि यह सही बात है कि फायर ब्रिगेड देरी से पहुंचा, लेकिन गलियां छोटी होने की वजह से भी ऐसा हुआ। छोटी गलियों के लिए फायर ब्रिगेड के पास छोटे वाहन होना चाहिए। इससे भी घटना स्थल पर पहुंचने में देर लगती है।

विदित हो कि जब सूरज बुझकर मद्धम होने लगता है, जब दिन की उजली- उजली सी तस्वीर अपना चेहरा बदलती है, जब शाम अपने ऊपर उदास और मायूस पैरहन पहनकर आती है और मरने वाले घर की छत पर सहमा हुआ चांद धीमे-धीमे मंडराता है, तो मन एक पड़ताल करता सा सुनाई देता है कि जिस घर में एक मौत हुई है, उस एक मौत के पीछे कितनी मौतें हो चुकी है। उस हादसे की तह में कितनी अ-दर्ज मौतें दर्ज हैं। आमतौर पर हम किसी हादसे में सिर्फ उतनी ही मौतें देखते हैं जो मौत की सरकारी फाइल में दर्ज की जाती है, सिर्फ वही सरकारी आंकड़ा देखते हैं, जो पुलिस की फाइल में दर्ज किया जाता है, लेकिन हादसों की तह में उसके अंधेरे में कितने लोग फनाह हो गए-कितने तन्हा रह गए, कौन जाने?

तारिक नईम का शेर याद आ रहा है- ***''अजीब दर्द का रिश्ता था सब के सब रोए, शजर गिरा तो परिंदे तमाम शब रोए।''*** मैं चाहता हूं कि मेरी रूह किसी परिंदे को, किसी चिडिया को सौंप दी जाए-मुझे इंसान के जिस्म का एतबार नहीं रहा। इंदौर के ब्रजेश्वरी एनेक्स में रहने वाले पुगलिया परिवार के घर में हुए इलेक्ट्रिक कार हादसे में 8 लोगों की बेहद दर्दनाक मौत हो गई। बच्चे मरे, औरतें मरीं, बुजुर्ग मरे-आंकड़ा हुआ 8 का। एक आशियाना उजड़ा। उसके परे जाकर देखा तो एक और आशियाना उजड़ा हुआ मिला, जो किसी ने नहीं देखा। पुगलिया परिवार के घर की छत पर बसाया गया बेजुबान पक्षियों का आशियाना। घर के ग्राउंड फ्लोर और पहली मंजिल पर आग की कालिख गवाही दे रही थी कि यहां आठ इंसानों की जिंदगी स्वाहा हो चुकी है, लेकिन इस आग की आंच घर के टेरेस तक पहुंची, जहां पुगलिया परिवार शायद परिंदों को दाना-पानी देते थे। जहां टेरेस पर तमाम रंगों की चिड़िया, तोते, कबूतर और अनजान परिंदे चहक रहे थे कि रो रहे थे, कौन जाने? 18 मार्च की तारीख में एक तरफ घर के नीचे पुलिस और पत्रकारों की इस बात पर पड़ताल चल रही थी कि कैसे आग में झुलस कर 8 मौतें हो गईं। वहीं दूसरी तरफ छत पर ये परिंदे अपने लिए दाना-पानी का इंतजार कर रहे थे। आग की लपटों से उठे धुएं और कालिख से वे अंदाजा लगा पा रहे थे कि उन्हें दाना देने वाले रहनुमा शायद अब नहीं रहे। ये लपटें उनके आशियानों तक भी पहुंची। उन गमलों तक गई जहां वे तपती गर्मी में ठंडक खोजते होंगे। वहां तक भी गई जहां उनके घोंसले थे और उन फूलों तक भी ये लपट गई जो उनके आशियाने को अब तक सजाते रहे हैं। लेकिन इस हादसे ने न सिर्फ उनके रहनुमाओं की जिंदगी खत्म कर दी, बल्कि उनके लाल और गुलाबी फूलों का रंग बदलकर उन्हें भी स्याह कर दिया। इस पत्रकार को जो जिंदगी और मौत के फेरे करता रहता है, उसे ये दर्द तो साल ही रहा है कि एक रात इस घर के 8 लोग अपनी मौत से अनजान नींद की गोद में इस उम्मीद में गए थे कि सुबह उठेंगे तो एक नया उजला दिन उनका इस्तकबाल करेगा, लेकिन एक हादसे ने नींद में ही उन्हें मौत की अनजान नींद में सुला दिया। लेकिन इसी के बरअक्स इसे ये भी दर्द सता रहा है कि इस मनहूस घर के सबसे ऊपर आसमान के ठीक नीचे इन परिंदों के भी आशियाने इस कदर उजड़े हैं कि तमाम शजर दिनभर रोते रहे। रात में भी रोएंगे, कौन जाने?

इन परिंदों को नहीं समझ आ रहा है कि आखिर उनके रहबर के घर के सामने इस गली में इंसानों की ये भीड़ क्यों लगी है। ये कैमरे, ये लाइटें क्यों चमक रही हैं। ये तमाम सायरन क्यों बज रहे हैं। वे तो सिर्फ यही जानते हैं कि सुबह हो गई है और कोई छत पर उनके लिए दाना-पानी लेकर आएगा। वे नहीं जानते कि आग क्या होती है, वे नहीं जानते कि लपट क्या होती है, वे नहीं जानते कि मौत क्या होती हैख्र वे नहीं जानते कि किसी सरकारी फाइल में न तो उनकी जिंदगी दर्ज होती है और न ही उनकी मौत. परिंदे नहीं जानते कि जो इंसान पेड़ की पेड़ काट देते हैं वो उनके आशियानों की क्ष्योंकर फिक्र करेंगे?

When the IPL season kicks off in the spring, and the first ball is bowled to the batter, all of India comes to a standstill. Screens light up in homes from Mumbai to Chennai, offices empty a little earlier than usual, and street cafés fill up long before the first over. Behind this cricket spectacle lies far more than just a tournament. The IPL has long been one of the country's most powerful economic engines, and its scale speaks for itself. Back in 2010, the value of the IPL ecosystem was $2.5 billion. In 2020, it had grown to $6.2 billion, and by 2024, it reached $12 billion. In 15 years, the IPL has expanded nearly fivefold, and in 2022, it officially became a decacorn league, with an estimated valuation exceeding $10 billion. In terms of media rights revenue per match, the IPL ranks second globally, behind only the NFL. Today, the IPL is a hub where cricket, media, advertising, tourism, infrastructure, and national pride converge. And at the center of it all is the fan.

☞ **IPL economy: Who wins along with teams :-** When discussing the economic impact of the IPL, the billions in media rights are usually mentioned. But the true scale is far broader – the tournament touches dozens of sectors, from multinational corporations to street vendors selling merchandise outside stadiums.

Media and digital platforms are primary drivers of this growth. IPL broadcast rights for 2023–2027 were sold for a record Rs.48,390 crore, of which digital rights accounted for Rs.23,758 crore. The 2025 IPL season attracted a total audience of 1.19 billion. For the first time in the tournament's history, digital platforms overtook television: 652 million viewers compared to 537 million on TV. Total viewing time reached a record 840 billion minutes, and the final between Royal Challengers Bengaluru and Punjab Kings became the most-watched match in T20 cricket history.

Advertising immediately follows media. The IPL remains the country's primary marketing platform: the cost of a 10-second TV slot in 2025 was Rs.18 lakh, a 10% increase compared to the previous season. According to TAM Advertising, the number of advertisers grew by 24%, while the number of brands increased by 26%. Some companies allocate up to 40% of their annual marketing budgets to campaigns during the IPL. The economic impact extends far beyond screens. The

IPL has transformed the traditionally "quiet" summer season, usually slowed by extreme heat, into a peak tourism period. In host cities, hotel occupancy reaches 85-90%, room rates rise by 150-200%, demand for airline tickets increases by 30%, and revenue from restaurants and food delivery around stadiums grows by 40-50%. According to Brand Finance, the tournament generates 1.25 million direct and indirect jobs. With the expansion to 84 matches starting in 2027, analysts predict this figure could grow to 1.5 million or more.

Infrastructure investment is creating a long-term impact. In 2024–2025, regions bidding to host league matches launched large-scale stadium renovation projects: Uttarakhand invested approximately Rs.1,000 crore in sports facilities, while Odisha began a Rs.700 crore transformation of the Barabati Stadium. Cricket academies equipped with AI analytics are also being established in Karnataka and Mumbai, making advanced training technologies accessible to players from second-tier cities. At the same time, the government benefits as well: GST on IPL tickets reached 40% in 2025, while the BCCI's annual revenue climbed to Rs.16,000 crore.

☞ **Social impact: Country united by cricket :-** Numbers are only one side of the IPL. The other cannot be measured in rupees. On match days, India moves to a single rhythm. Strangers discuss team lineups while waiting in queues. Families gather around screens. Offices close a little earlier than usual. In India, cricket is more than just a sport — it's a common language understood by everyone, from a schoolchild in a village to a senior executive in Mumbai.

Supporting the Mumbai Indians or the Chennai Super Kings means supporting your city, your identity, your people. The IPL represents a new kind of patriotism: vibrant, passionate, and unifying. Every fan who comes to the stadium, watches a broadcast, or discusses a match with friends becomes part of something larger than themselves.

☞ **Youth development and grassroots cricket :-** Franchises invest in local academies, talent-scouting programs, and school tournaments across the country. The story of every young player who breaks through the IPL inspires thousands of others. Rajasthan Royals, Kolkata Knight Riders, and Reliance Foundation are all investing in the next generation of cricket. And this momentum has already extended beyond men's cricket.

☞ **The WPL is the new global benchmark in women's sport :-** The Women's Premier League has become an economic phenomenon in its own right – the second-most valuable women's sports league in the world after the WNBA. The 2026 season set a new record: 370 million viewers and 34.5 billion minutes watched, a 142% year-on-year increase. Search queries related to women's cricket have risen by 103%. Smriti Mandhana's Rs.3.5 crore contract is paid for just three weeks of the tournament, while top WNBA stars earn a maximum of $249,244 over a four-month season. This signals a fundamental shift in the Indian sports culture.

And this transformation is already being felt far beyond the country's borders. The IPL is broadcast in more than 190 countries, attracting top players from around the world. The tournament shapes India's image as a technologically advanced and ambitious nation, generating global economic impact and actively influencing markets in the UAE, Saudi Arabia, the United States, and Australia. International investors, media companies, and brands increasingly view India through the prism of the IPL, seeing a country with enormous potential.

☞ **Knowledge, analytics, and new generation of fans :-** The IPL's growing popularity has given rise to a new type of fan — one who doesn't just watch the

game, but analyzes it. Millions study statistics, track player form, and compare team lineups. It's no longer just a hobby — it's a skill.

Fantasy cricket games have become the first step for many. Participants select virtual lineups based on real match statistics and compete against each other. This format requires knowledge of teams, pitch conditions, and player form — and this is where the fan becomes an analyst. During the IPL season, such platforms traditionally see a sharp increase in user activity.

A deep understanding of the game opens up additional opportunities. Those who follow the IPL not as casual spectators but as true experts can apply their knowledge to online cricket betting on licensed international platforms. This is not about excitement for its own sake — it is about applying analytics. This approach lies at the heart of MelBet cricket: a wide range of IPL betting options, live betting, and a mobile app, featuring Hindi and Bengali interfaces, for users who value reliability.

Is MelBet safe? Thousands of positive reviews confirm it. The platform operates under a Curaçao Gaming License, which helps ensure the protection of user data and transactions. And the more you understand the game, the more enjoyment it brings. This is the core principle of being an informed fan.

☞ **When passion for cricket brings more than emotion :-** If you decide to take your cricket knowledge beyond simply watching the game, there's one key rule: enjoyment of the game should always come before financial gain. An informed fan places bets based on analysis, not emotion. They set a limit in advance and stick to it regardless of the score. They treat any winnings as a pleasant bonus rather than a primary goal. And they choose reliable platforms, those with transparent terms, fast payouts, and round-the-clock support. This is what makes sports betting online a truly enjoyable experience, and this is exactly what MelBet review from real users confirms. By supporting your favorite team and staying within reasonable limits, you get the most out of every IPL match.

☞ **Looking to the future: From correction to global expansion :-** The league's brand value has adjusted from $12 billion to $9.6 billion amid changes in online gaming legislation – but the IPL is already looking ahead. Today, the tournament is expanding beyond India: franchises are acquiring clubs in SA20 (South Africa), ILT20 (UAE), Major League Cricket (USA), and The Hundred (England), exporting the Indian business model across continents. Starting in 2027, the tournament will grow to 84 matches per season, with plans to increase that number to 94 by 2028. The IPL is no longer just a tournament — it is becoming a cornerstone of the 21st-century global sports industry.

☞ **You are part of this Behind every IPL match stands a vast ecosystem :-** from the engineers who build the stadiums to the streamers who create content. And at the center of it all is the fan. Interest in the game, knowledge, and emotion are the fuel that powers this entire system. By buying a ticket, watching a broadcast, or discussing the team with friends, you participate in an economy that sustains millions of people and develops cricket across the country. By supporting your team, you support your city and its culture. This is patriotism in action. For those who follow the IPL more closely than simply checking the scoreboard, every match is an opportunity to put their knowledge to use. It's for these fans that platforms like MelBet exist, offering a wide range of IPL betting markets, a Hindi-language app, and 24/7 support. It's about the quality of the experience, just as much as the cricket itself. The IPL is more than cricket. It's a reflection of India, a country that knows how to transform passion into an economy and turn fans into part of something truly great.

कानूनी सलाह

शिवानंद गिरि
(अधिवक्ता)
Ph.- 9308454485
7004408851
E-mail :-
shivanandgiri5@gmail.com

✯ पीआर बॉन्ड क्या होता है, इसे कब दिया जाता है?

भारत में मुदालय (अभियुक्त/आरोपी) को बेल बांड (सुरती बॉन्ड/जमानतदार) की जगह पीआर बॉन्ड (पर्सनल रिकॉग्निजेंस बॉन्ड/पर्सनल बॉन्ड - निजी मुचलका) पर छोड़ने का स्पष्ट प्रावधान दंड प्रक्रिया संहिता (सीआरपीसी) की धारा 436, 437 और 441 (अब भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता - बीएनएसएस के अंतर्गत) के तहत किया गया है। सुप्रीम कोर्ट ने भी अपने कई फैसलों (जैसे सत्येंद्र कुमार अंतिल बनाम सीबीआई) में 'जेल नहीं, जमानत' के सिद्धांत को दोहराते हुए निर्धन आरोपियों के लिए पीआर बॉन्ड को प्राथमिकता देने की बात कही है।

❖ यहाँ पीआर बॉन्ड से संबंधित मुख्य प्रावधान और कानूनी स्थिति दी गई है :-

☞ **पीआर बॉन्ड (पर्सनल बॉन्ड) क्या है? :-** पीआर बॉन्ड का मतलब है कि आरोपी को बिना किसी जमानतदार (सुरती) या जमानत राशि (कैश/प्रॉपर्टी) जमा किए, केवल अपने निजी मुचलके (स्वयं की प्रतिज्ञा) पर रिहा किया जाता है।

☞ **मुख्य कानूनी प्रावधान (सीआरपीसी के अनुसार) :-** सीआरपीसी की धारा 436 (जमानती अपराध): यदि आरोपी जमानती अपराध में गिरफ्तार है और वह जमानतदार देने में असमर्थ है, तो उसे 'निजी बांड' (पर्सनल बॉन्ड) पर छोड़ने का प्रावधान है। यदि वह एक सप्ताह के भीतर जमानत नहीं दे पाता है, तो इसे निर्धन माना जा सकता है।

❖ सीआरपीसी की धारा 437 (गैर-जमानती अपराध) :- यदि आरोपी निर्धन है और जमानतदार (सुरती) नहीं दे पा रहा है, तो कोर्ट या पुलिस उसे 'बिना जमानतदार के बांड' (पर्सनल बॉन्ड) पर छोड़ सकती है।

❖ सीआरपीसी की धारा 441/441ए (बांड की प्रक्रिया) :- कोर्ट के पास यह अधिकार है कि वह भारी-भरकम जमानत की शर्त रखने के बजाय आरोपी के निजी मुचलके को ही पर्याप्त मान ले।

❖ पीआर बॉन्ड कब दिया जाता है? :-

☞ **निर्धनता :-**यदि अभियुक्त गरीब है और जमानतदार नहीं ला सकता है।

☞ **मामूली अपराध :-** यदि अपराध कम गंभीर है और आरोपी के भागने की संभावना नहीं है।

☞ **अनावश्यक जेल :-** जब बेल मिलने के बावजूद, जमानतदार न मिल पाने के कारण कोई लंबे समय तक जेल में हो, तो सुप्रीम कोर्ट के निर्देशानुसार पीआर बॉन्ड का उपयोग किया जाता है।

❖ सुप्रीम कोर्ट के दिशानिर्देश (सत्येंद्र कुमार अंतिल मामला) :- अदालतें ऐसे बेल बांड की मांग न करें जिन्हें भरना आरोपी के लिए असंभव हो। जमानतदार पेश करने में असमर्थ होने पर आरोपी को केवल पीआर बॉन्ड पर छोड़ा जाना चाहिए। सुनवाई में देरी होने पर, आरोपी को पीआर बॉन्ड पर रिहा करने के प्रावधान का लाभ मिलना चाहिए।

❖ पीआर बॉन्ड में क्या होता है? :- आरोपी को एक कागज पर हस्ताक्षर करने होते हैं कि वह हर पेशी पर आएगा और कोर्ट की सभी शर्तों का पालन करेगा। यदि वह भागता है, तो उसे बांड की राशि का भुगतान करना होगा, लेकिन उस समय उसे किसी तीसरे व्यक्ति की गारंटी (सुरती) की आवश्यकता नहीं होती।

❖ निष्कर्ष :- कानून के अनुसार, पीआर बॉन्ड निर्धन और ऐसे आरोपियों के लिए एक अधिकार की तरह है जो जमानतदार नहीं दे सकते। यह कानून 'जेल नहीं, जमानत' के सिद्धांत को लागू करने के लिए उपयोग किया जाता है।

✯ मुदालय का कोर्ट या पुलिस कस्टडी से भाग जाने पर कितनी सजा का प्रावधान है?

कोर्ट (न्यायालय) या पुलिस हिरासत से कैदी का भाग जाना भारतीय कानून के तहत एक गंभीर अपराध है। 1 जुलाई 2024 से लागू नए कानूनों के तहत, यह अब भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) के अंतर्गत आता है।

❖ मुख्य धाराएं और अपराध :-

भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 262/263 (पूर्व आईपीसी 224/225) :- यदि कोई व्यक्ति जिसे न्यायालय ने दोषी ठहराया है, या जिस पर किसी अपराध का आरोप है, वह पुलिस की वैध हिरासत (लॉफुल कस्टडी) से भागता है, तो यह कृत्य षविधिपूर्ण अभिरक्षा से भागनाष (एस्केप फ्रॉम लॉफुल कस्टडी) का अपराध है।

☞ **सजा :-** इस अपराध के लिए अलग से सजा (इंप्रिजनमेंट) और जुर्माना (फाइन) दोनों हो सकते हैं। यह सजा पहले से चल रही सजा के अतिरिक्त हो सकती है।

❖ अतिरिक्त जानकारी :-

☞ **सहायता करने पर धारा (आईपीसी 130 / बीएनएस 183) :-** यदि कोई बाहरी व्यक्ति कैदी को भागने में मदद करता है, तो उस पर भी कड़ी कानूनी कार्यवाही होती है।

☞ **पुलिस की लापरवाही :-** यदि पुलिस की लापरवाही से कैदी भागता है, तो इसके लिए पुलिस अधिकारी पर भी आईपीसी धारा 223 के तहत मामला दर्ज हो सकता है। संक्षेप में, कोर्ट से भागना भारतीय न्याय संहिता के अंतर्गत 'विधिपूर्ण अभिरक्षा से भागना' नामक गंभीर आपराधिक कृत्य है।

आवश्यकता

अगर आप में है आत्मविश्वास और तीव्र इच्छा, तो मौका है इसे पूरा करने का....

बिहार की सबसे लोकप्रिय पत्रिका

केवल सच

और

केवल सच TIMES

को बिहार के हर जिले, प्रखंड एवं पंचायत स्तर पर संवाददाता, विज्ञापन प्रतिनिधि (डोर टू डोर मार्केटिंग) एवं प्रसार के कार्य के लिए परिश्रमी एवं जुझारू युवक/युवतियों की आवश्यकता है।

योग्यता:-

जिला ब्यूरो	प्रखंड संवाददाता	पंचायत संवाददाता	विज्ञापन प्रतिनिधी
स्नात्तक उतीर्ण	स्नात्तक/इंटर	स्नात्तक/इंटर/मैट्रिक	स्नात्तक/इंटर/मैट्रिक

संपर्क करे:-

पूर्वी अशोक नगर, रोड नं.-14, कंकड़बाग

पटना-20, मो.- 9431073769, 9955077308

WESTERLIN DRUGS PVT. LTD.

(Serving nation since 1990)

WESTOCITRON
WESTOCLAV
WESTOFERON
WESTOPLEX
QNEMIC

AOJ
AZIWEST
DAULER
MUCULENT
AOJ-D
BESTARYL-M
GAS-40
MUCULENT-D

SEVIPROT
WESTOMOL
WESTO ENZYME
ZEBRIL

WESTERLIN DRUGS PVT. LTD.
Industrial area, Fatuha-803201
E-mail- westerlindrugsprivatelimited@gmail.com
Phone No.:0162-3500233/2950008